* ॐ *

महाकवि श्री धनञ्जय विरचिता

॥ नाममाला ॥

अर्थात्

अतीवोपयोगी संस्कृतशब्दों का कोश

जिसको

जयपुरनिवासी साहित्यशास्त्री जवाहरलाल बाक-
लीवाल दि० जैनने भाषानुवाद से विभूषित
करके निज द्रव्यसे

बालचन्द्रयन्त्रालय जयपुर में मुद्रित कराई

चैत्रशुक्ला द्वितीया सं० १९६२ वि० ।

प्रथम वार १००० प्रति, मूल्य प्रतिपुस्तक ।)

* ॐ *

महाकवि श्री धनञ्जय विरचिता

॥ नाममाला ॥

अर्थात्

अतिबोपयोगी संस्कृतशब्दों का कोश

जिसको

जयपुरनिवासी साहित्यशास्त्री जवाहरलाल बाकलीवाल दि० जनने भाषानुवाद से विभूषित करके निज द्रव्यसे

बालचन्द्रयन्त्रालय जयपुर में मुद्रित कराई

चैत्रशुक्ला द्वितीया सं० १९६२ वि० ।

प्रथम वार १००० प्रति, मूल्य प्रतिपुस्तक ।)

॥ श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

प्रस्तावना

इस धनञ्जयनिघण्टु तथा धनञ्जयकोश अपरनामक नाममालाके कर्त्ता दिगम्बरीय जैन गृहस्थशिरोमणि महाकवि श्री धनंजयजीने अपने अवतारसे कब किस वसुधामंडलको मंडित किया इस निश्चयके अर्थ दो कथाये प्राप्त हुई हैं उनमें प्रथम तो सुदृष्टितरंगिणीके ४१वें तरंगमें इस प्रकार है कि एक दिन उज्जयिनीनिवासी सुदत्त शेठ अपने मनोहर पुत्रके साथ भोज राजाके समीप गया तब भोजने पूछा कि यह तेरा पुत्र क्या पढ़ताहै शेठने कहा कि धनंजयमहापंडितविरचित नाममाला पढ़ताहै यह सुनकर भोजने उत्तम मनुष्यों द्वारा धनंजयजी को बुलवाये और उच्चासन देकर पूछा कि आपने क्या२ ग्रंथ रचे हैं तब धनंजयजीने कहा कि मेरे रचे हुए ग्रंथोंमें अन्य पंडितोंने अपना नाम धरलिया है उस समय सभाके पंडितोंने भोजसे निवेदन किया कि महाराज यह कबका पंडित है इसके गुरु मानतुंग हैं वे ही महामूर्ख हैं इतनी सुनतेही धनंजयजीने कहा कि मेरे गुरु तो दूर रहैं ये सब पंडित मुझसे ही बाद करो तत्पश्चात् राजाज्ञासे बाद करके धनंजयजीने सब पंडितोंको परास्त कर दिये तब कालिदास कुपित होकर भोजसे निवेदन किया कि महाराज यह धनंजय तो महामूर्ख है इसके साथ क्या बाद करें इसके गुरु मानतुंग हैं उनसे बाद करेंगे इसके आगे भक्तामरस्तोत्रकी उत्पत्तिकी कथा है" दूसरे मि. अण्णाप्पा फडयापा चोगुले बी. ए. एल्. एल्. बी. कर्णाटकीय कथाको-

शके आधारसे कहतेहैं कि धनंजयजी अमरसिंहके साले थे एक दिन भोजकी सभामें यह घोषणा हुई कि जो कवि इतने दिनो की अवधिमें उत्तम कोश बना कर लावेगा उसको भेट दी जावेगी तदनुसार धनंजयजीने भी एक कोश बनाया और उस को घरपर ही रखकर कार्यवश ग्रामान्तरमें चले गये पीछेसे अमरसिंह अपनी स्त्री (धनंजयजी की बहन) द्वारा उस कोशको चुरवाकर अपने नामका करके भोजसे भेट पाली तत्पश्चात् धनंजयजी घर आये जब उस कोशको न देखकर अवधिके दिन कम रहनेसे शीघ्रतासे नाममालाको निर्मित की और भोजको समर्पण कर अत्युत्तम भेट पाई।

इन उक्त कथाओंसे विदित होताहै कि धनंजयजी सुप्रसिद्ध भोज भूपति के समयमें जो कि अनेक प्रमाणोंसे विक्रमकी ११ वीं शताब्दीमें निश्चित है मालवदेशस्थ उज्जयिनीनगरीमें विद्यमान थे और उसी समय किसी निमित्तसे नाममाला को रची वही नाममाला जो कि अपने अपूर्व प्रभावके कारण तत्काल भोजनरेश तथा सुदत्त श्रेष्ठी आदि से समादरणीय होकर पहले समस्त कोशकारों टीकानिर्माताओ तथा विद्वानोंके कंठका भूषण थी मुझे एक सरस्वती भंडारमें अनायास मिली जिसको कौतुकवश आद्योपान्त अवलोकन कर यह अभिरुचि हुई कि यदि संस्कृत जिज्ञासुओंको उपयोगी शब्दोंका बोध होनेके लिये अमरकोशादि विशाल ग्रंथ न पढ़ाकर प्रथम ही यह पढ़ाई जावै तो बहुत ही उत्तम हो यह विचार कर श्रीमती जैनमहापाठशाला जयपुर के प्रबन्धकर्त्ता विद्यानुरागी पूज्य पं० मोतीलालजी महाशय प्रभृति अनेक सज्जनोंकी सम्मतिसे गत वर्ष महापाठशालाके

पठनक्रममें अमरकोष प्रथमकांडके स्थानमें नियत कर दी जिससे विद्यार्थियोंको बहुत लाभ पहुंचा परन्तु लिखित शुद्ध प्रति तथा टीका टिप्पण आदिके विना पाठकोंकी बुद्धिमें कितने ही गूढ़ आशयोंका यथावत प्रतिभासन न होनेसे पुनः विचार हुआ कि यदि इस पुस्तकको सरल भाषार्थसे विभूषित कर शुद्धतापूर्वक उत्तम रीतिसे मुद्रित करा दीजाय तो यह सब कठिनाइयां दूर होजांय और सर्वसाधारणको इस गुप्त कोश रत्न द्वारा अत्यन्त लाभ पहुंचे तदनुसार दो प्रतियोंके आधार इसका अनुवाद करना प्रारंभ किया और जो शब्द अथवा उसका अर्थ बुद्धिमें स्पष्ट प्रतीत न हुआ उसको सावधानता पूर्वक शब्दकल्पद्रुम, पद्मचंद्र, अमर, मेदिनी आदि अनेक कोशो तथा उत्तम २ विद्वानों द्वारा निश्चित करके लिखा तथापि एक महाकवि द्वारा निर्मित होनेसे इस छोटेसे कोषमें कितनेही शब्द ऐसे मिले कि जिनका अर्थ तो दूर रहो उन शब्दोकी प्राप्ति भी अन्य कोषोमें न हुई ऐसी दशामें बुद्ध्यनुसार लिखा है और कहीं कहीं संदेहके चिन्ह भी कर दियेहैं परन्तु संतोष अद्यावधि नहीं है अतः विज्ञ जनोंसे प्रार्थना है कि यदि इस कोषकी संस्कृत टीका उपलब्ध हो अथवा अपनी बुद्धिमे जो पाठ असमीचीन प्रतीत हो तो उससे मुझे सूचित करके अनुगृहीत करें क्योंकि सर्वः "सर्वं न जानाति" ।

मेरे पास अर्द्ध पुस्तक मुद्रित होने तक दो पुस्तकें थी तत्पश्चात् क्रमानुसार तृतीय और चतुर्थ पुस्तक प्राप्त हुई अतः दो पुस्तकोंके आधारसे जो पाठ पहले मुद्रित होचुका उसके स्थानमें तृतीय चतुर्थ पुस्तकसे जो पाठ अधिक उत्तम प्रतीत हुआ उसको तथा उस पाठभेदजनित अर्थभेदको तथा यथा

संभव मुद्रणदोषादिजनित अशुद्धियोंको शुद्धिपत्रमें देकर उनके आगे शुद्धपाठ दे दियाहै अतः पुस्तकको प्रथम शुद्धिपत्र से शुद्ध करलेना चाहिये और यह भी विदित रहै कि नाममालाके अतिरिक्त द्विसंधानमहाकाव्य तथा विषापहारस्तोत्र ये दो ग्रंथ तो उक्त कविकृत प्रसिद्ध तथा पहले से ही मुद्रित हैं परन्तु हमको नाममालाके छपते समय इन्ही कृत एक अनेकार्थस्वरूपनिरूपणापरनामक छोटासा कोश और मिला जिसको आवश्यक समझकर "अनेकार्थनाममाला" इस नामसे ग्रंथके अन्तमें पृथक् दे दियाहै और सुगम जान कर भाषानुवाद नहीं छपवायाहै सो यदि पाठकमहाशय अपनी इच्छा प्रकट करेंगे तो इस आवृत्तिजनित सब दोष द्विरावृत्तिमें दूर करा दियेजावेंगे। और भूमिका लिखते समय धनंजयजी की प्रशंसा विषयिक ४ श्लोक और मिलेहैं वे ये हैं "प्रज्ञासिधारयाक्रान्ते चिरं नानार्थधारिणः। शब्दाः सुखं वसन्त्यत्र यशः शेषे धनञ्जये ।१। द्विसन्धाने निपुणतां स तां चक्रे धनञ्जयः। यया जातं फलं तस्य सतां चक्रे धनं जयः। २ । जाते जगति वाल्मीके शब्दः कविरिति स्थितः। कवी इति ततो व्यासे कवयश्चेति दण्डिनि। ३ । कवयः कवयश्चेति बहुत्वं दूरमागतम्। विना वृत्तं चिरन्त्वत्र कविर्जातो धनञ्जयः। ४ । अतः पाठकजनों से निवेदन है कि इन श्लोकोंको पुस्तकके अन्तमें दी हुई प्रशस्ति के साथ युक्त करके धनंजयजीकी विद्वत्ताका अनुमान करें और निष्पक्ष होकर ऐसे महाविद्वान् द्वारा निर्मित सर्वमान्य प्राचीन कोशके प्रचार करनेमें यथाशक्ति उद्यम करें इत्यलम्॥

निवेदक—

विद्यानुचर साहित्यशास्त्रीत्युपाधिधारक

जवाहरलाल बाकलीवाल दि. जैन

श्रीवीतरागाय नमः ।

अथ महाकविश्रीधनञ्जयविरचिता ।

* नाममाला *

तन्नमामि परंज्योतिरवाङ्मानसगोचरम् । उन्मूलयत्यऽविद्यां यद्विद्यामुन्मीलयत्यपि । १ । द्वयं द्वितयमुभयं यमलं युगलं युगं । युग्मं द्वंद्वं यमं द्वैतं पादयोः पातु जैनयोः । २ । ऋषिर्यतिर्मुनिर्भिक्षुस्तापसः संयतो व्रती । तपस्वी संयमी योगी वर्णी साधुश्च पातु वः । ३ । दीक्षितं मौढ्यं शिष्यं च

नत्वा श्रीवर्द्धमानं तं वाङ्मयस्य प्रकाशकम् ।
धनञ्जयकवेर्नाममालाभाषां करोम्यहम् ॥ १ ॥

मैं धनजय नामा कवि वचन तथा मनके अगोचर उस परमज्योतिके धारक श्रीजिनेन्द्र भगवान्‌को नमस्कार करता हू जोकि भव्यजीवोंके अज्ञानका नाश करते हैं, और ज्ञानको प्रकट करते हैं ॥ १ ॥ द्वय द्वितय उभय यमल युगल युग युग्म द्वद्व यम द्वैत यह नाम युगल (जोड़े) के हैं इसलिये श्रीजिनेन्द्रके चरणोंका युगल तुम्हारी रक्षा करो ॥ २ ॥ ऋषि यति मुनि भिक्षु तापस सयत व्रतिन् तपस्विन् संयमिन् योगिन् वर्णिन् और साधु ये नाम मुनिके हैं वे मुनि तुम्हारी रक्षा करो ॥ ३ ॥ दीक्षित

तमन्तेवासिनं विदुः। कृतान्तागमसिद्धान्तग्रंथाः शास्त्रमतः परम्। ४। भूमिर्भूः पृथिवी पृथ्वी गव्हरी मेदिनी मही। धरा वसुमती धात्री क्षमा विश्वंभराऽवनिः। ५। वसुधा धरणी क्षोणी क्ष्मा धरित्री क्षितिश्च कुः। कुम्भिनीलोर्व्वरा चोर्वी जगती गोर्वसुन्धरा। ६। तत्पर्यायधरः शैलः तत्पर्यायपतिर्नृपः। तत्पर्यायरुहो वृक्षः शब्दमन्यश्च योजयेत्। ७। दरीभृदचलः शृङ्गी पर्व्वतः सानुमान्गिरिः। नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥ ८ ॥ प्रस्थं

मौञ्ज्य शिष्य अन्तेवासिन् ये नाम विद्यार्थी (चेले) के हैं। कृतान्त आगम सिद्धान्त ग्रन्थ शास्त्र ये नाम शास्त्रके हैं ॥ ४ ॥ भूमि भू पृथिवी पृथ्वी गव्हरी मेदिनी मही धरा वसुमती धात्री क्षमा विश्वंभरा अवनि ॥ ५ ॥ वसुधा धरणी क्षोणी क्ष्मा धरित्री क्षिति कु कुम्भिनी इला उर्वरा उर्वी जगती गो वसुन्धरा ये नाम पृथिवी (जमीन) के हैं ॥ ६ ॥ इन पृथिवी के नामोंके साथ धर या धर के समान अर्थवाला भर आदि शब्द जोड दिया जाय तो वह पर्वतका नाम होजाता है जैसे भूमि(पृथिवी) का धर (धारण करने वाला) भूमिधर इसही प्रकार भूधर, धरके समानार्थक भर के जोडनेसे भूमिभर भूभर इत्यादिक नाम पर्वतके बन गये तथा पृथ्वी के नामों के साथ पति शब्दका योग करनेसे भूमि (पृथिवी) का पति (स्वामी) भूमिपति एवं भूपति आदि राजाके नाम होजाते हैं और पति शब्दके समानार्थक स्वामिन् शब्दके योगसे भूमिस्वामिन् आदि भी राजाके नाम होजाते हैं एवं पृथ्वीके नामोंके साथ रुहको लगादेनेसे भूमिरुह (पृथ्वीमें उगने वाला) आदि वृक्ष (दरख्त) के नाम होजाते हैं॥७॥ दरीभृत् अचल शृंगिन् पर्वत सानुमत् गिरि नग शिलोच्चय अद्रि शिखरिन् त्रिककुद मरुत् ॥ ८ ॥ प्रस्थवत् पार्श्ववत् तटवत् सानुवत् मेखलावत्

पार्श्वं तटं सानुर्मेखलोत्पत्तिका तटी । नितम्बमन्तो दन्तश्च तद्धानपि गिरिः स्मृतः ॥ ९ ॥ राजाऽधिपः पतिः स्वामी नाथःपरिबृढः प्रभुः । ईश्वरो विभुरीशानो भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥ १० ॥ अनोकुहस्तरुः शाखी विटपी फलिनो नगः । द्रुमोऽह्रिपः फलेग्राही पादपोऽगो वनस्पतिः ॥ ११ ॥ तत्पर्यायचरे ज्ञेयो हरिर्बलीमुखः कपिः । वानरो प्लवगश्चैव गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥ १२ ॥ विपिनं गहनं कक्षमरण्यं काननं वनं । कांतारमटवीदुर्गं तच्चरः स्याद्वनेचरः ॥ १३ ॥ पुलिन्दः शबरो दस्युर्निषादो व्याधलुब्धकौ । धानुष्कोऽथ किरातश्च सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥ १४ ॥ वार्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु पाथो-

---

उत्पत्तिकावत् तटावत् नितम्बवत् अन्तवत् दन्तवत् य पर्वत (पहाड) के नाम है ॥९॥ राजन् अधिप पति स्वामिन् नाथ परिबृढ प्रभु ईश्वर विभु ईशान भर्तृ इन ईश ये नाम राजा अथवा स्वामी (मालिक) के है ॥१०॥ अनोकुह तरु शाखिन् विटपिन् फलिन् नग द्रुम अह्रिप फलग्राहिन् पादप अग वनस्पति ये नाम वृक्ष (दरख्त) के है ॥ ११ ॥

इन के साथ चर जोडने से अनोकुहचर आदि और हरि बलीमुख कपि वानर प्लवग गोलागूल मर्कट ये नाम वानर (बन्दर) के है ॥१२॥ विपिन गहन कक्ष अरण्य कानन बन कान्तार अटवी दुर्ग ये नाम बन (जगल) के हैं इन के साथ चर जोडनेसे विपिनचर आदि भीलके नाम होते है १३॥ पुलिन्द शबर दस्यु निषाद व्याध लुब्धक धानुष्क किरात अरण्यानीचर ये नाम भी भीलकेहै ॥१४॥ वार् वारि क पयस् अम्भस् अम्बु पाथस्

ऽर्णः सलिलं जलम्। शरं वनं कुशं नीरं तोयं जी-
वनमप्विषम् ॥ १५ ॥ तत्पर्यायचरो मत्स्यस्तत्पर्या-
यप्रदो घनः । तत्पर्यायोद्भवं पद्मं तत्पर्यायधरोऽम्बु-
धिः ॥१६ ॥ पृथुरोमा षडक्षीणो यादो वैशारिणो
झषः । विशारी सफरो मीनः पाठीनो निमिषस्ति-
मिः ॥ १७ ॥ घनाघनो घनो मेघो जीमूतोऽभ्रं ब-
लाहकः । पर्जन्यो मुदिरोऽनभ्राट् शंपा सौदामिनी
तडित् ॥ १८ ॥ आकालिकी क्षणरुचिर्विद्युत्तत्प-
तिरम्बुदः । निर्घातमशनिर्वज्रमुल्काशब्दं च योज-
येत् ॥१९॥ परिषत्कर्दमः पङ्कस्तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं सरोजं सरसीरुहम् ॥ २० ॥

अर्णस् सलिल जल शर वन कुश नीर तोय जीवन अप् विष ये नाम जलके
है ॥ १५ ॥ इन के साथ चर जोडने से जलचर आदि मच्छ के नाम
प्रद के लगाने से जलप्रद आदि (वद्दल) के नाम उद्भव का योग
करने से जलोद्भव आदि कमल के नाम तथा धर के लगाने से जलधर
आदि समुद्र के नाम बन जाते है ॥ १६ ॥ पृथुरोमन् षडक्षीण यादस् वै-
शारिण झष विशारिन् सफर मीन पाठीन निमिष तिमि ये नाम मच्छ
आदि जलचर जीवोंके है ॥१७॥ घनाघन घन मेघ जीमूत अभ्र बलाहक
पर्जन्य मुदिर अनभ्राज् ये नाम मेघ (वद्दल) के हैं शंपा सौदामिनी
तडित् ॥ १८ ॥ आकालिकी क्षणरुचि विद्युत् ये बिजली के नाम है
इन के तथा निर्घात अशनि वज्र उल्का इन शब्दों के साथ पति शब्द
का योग होने से शंपापति आदि ये दश नाम भी मेघ के बन जाते है
॥ १९ ॥ परिषत् कर्दम पंक ये नाम कादे (कीचड़) के हैं इन के
साथ ज जोडने से परिषज्ज कर्दमज पंकज ये और कमल नलिन पद्म

खरदंडं कोकनदं पुण्डरीकं महोत्पलम् । इंदीवरंचा
रविन्दं शतपत्रं च पुष्करम् ॥ २१ ॥ स्यादुत्पलं
कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च । इंदीवरं च नीलेऽस्मिन्
सिते कुमुदकैरवे ॥२२॥ तद्वती विशनी ज्ञेया व्रतती
वल्लरी लता। वल्लीनामानि योज्यानि वारिधिर्वर्ण्य-
तेऽधुना॥२३॥ स्रोतस्विनी धुनी सिंधुः स्रवंती निम्न-
गाऽपगा। नदी नदो द्विरेफश्च सरिन्नाम्नी तरंगिणी
॥२४॥ तत्पतिश्च भवत्यब्धिः पारावारोऽमृतोद्भवः ।
अपारवारऽकूपारो रत्नमीनाभिधाकरः॥ २५ ॥ स-
मुद्रो वारिराशिश्च सरस्वान्सागरोऽर्णवः । सीमोपकंठ
तीरं च पारं रोधोवधिस्तटम् ॥ २६ ॥ भंगस्तरङ्गक-

सरोज सरसीरुह ॥२०॥ खरदण्ड कोकनद पुण्डरीक महोत्पल इन्दीवर अरविन्द शतपत्र पुष्कर ये कमल के नाम हैं ॥ २१ ॥ उत्पल कुवलय नीलाम्बुजन्मन् इन्दीवर ये नीलकमल के नाम है जो श्वेत कमल होता है उस के कुमुद और कैरव ये दो नाम है ॥ २२ ॥ इन नामों के साथ वती तथा व्रतति वल्लरी लता वल्ली इत्यादिक बेलके नामों को जोड़ देने से कमलवती कमलव्रतति कमलवल्ली कमललता आदि कमलिनी के नाम बन जाते है । अब समुद्र के नाम वर्णन करते है ॥ २३ ॥ स्रोतस्विनी धुनी सिन्धु स्रवन्ती निम्नगा आपगा नदी नद द्विरेफ सरित् तरगिणी ये नाम नदी के है ॥ २४ ॥ इन के साथ पति जोड़ देने से स्रोतस्विनीपति आदि अब्धि (समुद्र) के नाम बन जाते हैं । और पारावार अमृतोद्भव अपारवार् अकूपार रत्नाकर मीनाकर ॥ २५ ॥ समुद्र वारिराशि सरस्वत् सागर अर्णव ये नाम भी समुद्र के है । सीमा उपकण्ठ तीर पार रोधस् अवधि तट ये नाम किनारे के है ॥ २६ ॥ भग

ल्लोलो वीचिरुत्कलिकावलिः । पाली वेला तटो-च्छ्वासो विभ्रमोयमुदन्वतः ॥२७॥ मनुष्यो मानुषो मर्त्यो मनुजो मानवो नरः । ना पुमान् पुरुषो गोधो धवःस्यात्तत्पतिर्नृपः ॥२८॥ भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः पदातिः पदगोऽनुगः । भटोऽनुजीव्यनुचरः शस्त्रजीवी च किङ्करः ॥ २९ ॥ स्त्री नारी वनिता मुग्धा भामिनी भीरुरङ्गना । ललना कामिनी योषिद्योषा सीमन्तिनी वधूः ॥३०॥ नितम्बिन्यऽबला बाला कामुकी वामलोचना । भामा तनूदरी रामा सुन्दरी युवतिश्चला ॥३१॥ भार्या जाया जानिः कुल्या कलत्रं गेहिनी गृहम् । महिला मानिनी पत्नी तथा दाराःपुरन्ध्रयः ॥ ३२ ॥ वल्लभा प्रेयसी प्रेष्टा रमणी

तरग कल्लोल वीचि उत्कलिका आवलि ये नाम तरग (लहर) के हैं । पाली वेला तटोच्छ्वास ये समुद्र के विभ्रम के नाम हैं ॥ २७ ॥ मनुष्य मानुष्य मर्त्य मनुज मानव नर नृ पुमस् पुरुष गोध धव ये मनुष्य के नाम हैं । इन का पति (स्वामी) अर्थात् मनुष्यपति आदि राजा होता है ॥ २८ ॥ भृत्य भृतक पत्ति पदाति पदग अनुग भट अनुजीविन् अनुचर शस्त्रजीविन् किंकर ये नाम सेवक (नौकर) के हैं ॥ २९ ॥ स्त्री नारी वनिता मुग्धा भामिनी भीरु अगना ललना कामिनी योषित् योषा सीमन्तिनी वधू ॥३०॥ नितम्बिनी अबला बाला कामुकी वामलोचना भामा तनूदरी रामा सुन्दरी युवति चला ये नाम स्त्री के हैं ॥ ३१ ॥ भार्या जाया जनि कुल्या कलत्र गेहिनी गृह महिला मानिनी पत्नी दारा पुरंध्री ये अपनी स्त्री के नाम हैं ॥ ३२ ॥ वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा रमणी दयिता

दयिता प्रिया । इष्टा च प्रमदा कान्ता चण्डी प्रण-
यिनी तथा ॥ ३३ ॥ सती पतिव्रता साध्वी पति-
व्रत्येकपत्यपि । मनस्विनी भवत्यार्या विपरीता नि-
रूप्यते ॥ ३४ ॥ बन्धकी कुलटा मुक्ता पुनर्भूः पुं-
श्चली खला । स्पर्शाभिसारिका दूती स्वैरिणी संफ-
ली तथा ॥ ३५ ॥ गणिका लञ्जिका वेश्या रूपा
जीवाविलासिनी । पण्यस्त्री दारिका दासी का-
मुकी सर्ववल्लभा ॥ ३६ ॥ कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः
प्रियः कामी च कामुकः । वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान्
विटश्च रमणो वरः ॥ ३७ ॥ सवित्री जननी माता
जनकः सविता पिता । देहोऽपघनकायाङ्गं वपुः
संहननं तनुः ॥ ३८ ॥ कलेवरं शरीरं च मूर्त्तिरस्मा-
द्भवः सुतः । पुत्रःसूनुरपत्यं च तुक् तोकं चात्मजः

प्रिया इष्टा प्रमदा कान्ता चण्डी प्रणयिनी ये अपनी प्यारी स्त्री के नाम है सती पतिव्रता साध्वी पतिव्रति एकपति मनस्विनी आर्या ये शीलवती स्त्री के नाम है अब व्यभिचारिणी स्त्री के नाम कहे जाते है ॥३४॥ बन्धुकी कुलटा मुक्ता पुनर्भू पुंश्चली खला स्पर्शा अभिसारिका दूती स्वैरिणी सफली ये व्यभिचारिणी स्त्री के नाम है ॥ ३६ ॥ कांत इष्ट दयित प्रीत प्रिय कामिन् कामुक वल्लभ असुपति प्रेयस् विट रमण वर ये नाम भर्तार (पति) के है ॥ ३७ ॥ सवित्री जननी माता ये नाम माता के है जनक सवितृ पितृ ये नाम पिता के है । देह अपघन काय अंग वपुस् संहनन तनु ॥ ३८ ॥ कलेवर शरीर मूर्त्ति ये शरीर के नाम है शरीर से भव (होनेवाला) पुत्र होता है अर्थात् शरीरके नामों

प्रजाः ॥ ३९ ॥ उद्वाहस्तनयः पोतो दारको नंद-नोर्भकः । स्तनन्धयोत्तानशयौ स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ॥४०॥ वयस्याली सहचरी सध्रीची सवयाः सखी । आली विवर्जितं मित्रं सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥ ४१ ॥ सहकृत्वा सहकारी सहायः समवायिकः । स-नाभिः सगोत्रो वन्धुः सोदर्यो वरजोऽनुजः ॥ ४२ ॥ कनीयानग्रजो ज्येष्ठो भ्रातृजानी स्वसानुजा । भर्तुः स्वसाननन्दा स्यान्मातुलानी प्रियाम्बिका ॥४३॥ वैर्यारातिरमित्रोऽरिर्द्विट् सपत्नो द्विषद्रिपुः । असेव्यो दुर्जनः शत्रुर्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥ ४४ ॥ दी-

के साथ भव लगा देनेसे देहभव आदि और पुत्र सूनु अपत्य तुक् तोक आत्मज प्रजा ॥ ३९ ॥उद्वह, तनय पोत दारक नदन अर्भक स्तनंधय उत्तानशय ये सब पुत्रके नाम है यदि इन नामों के स्त्रीप्रत्ययका योग हो-जाय तो देहभवा पुत्री इत्यादि और दुहितृ ये नाम पुत्री के हैं ॥ ४० ॥ वयस्या आली सहचरी सध्रीची सवयाः सखी ये नाम सखी(सहेली) के है आली के विना सब सखी के नाम अर्थात् वयस्य सहचर सध्र्यञ्च् सवयः सखि और मित्र सबत्र मित्रयुज् सुहृद् ये नाम मित्र (दोस्त) के है ॥ ४१ ॥ सहकृत्वन् सहकारिन् सहाय समवायिक ये नाम सहायक (मददगार)के है सनाभि सगोत्र बंधु सोदर्य ये नाम भाई के है, अवरज अनुज ॥ ४२ ॥ कनीयस् ये नाम छोटे भाई के है अग्रज ज्येष्ठ दो नाम बडे भाई के हैं, भ्रातृजानी स्वसृ ये नाम बहन के है अनुजा यह नाम छोटी बहन का है ननन्दा यह नाम अपने पतिकी बहन का अर्थात् ननद का है मातुलानी प्रियाम्बिका ये नाम मामी का है ॥ ४३ ॥ वै-रिन् अराति अमित्र अरि द्विष सपत्न द्विषत् रिपु असेव्य दुर्जन शत्रु दुष्ट द्वे-षिन् खल अहित ये नाम वैरी (दुश्मन) के हैं ॥४४॥ दीधिति भानु उश्न

धितिर्भानुरुश्मेंशुर्गभस्तिः किरणः करः । पादो रु-
चिर्मरीचिर्भास्तेजोऽर्चिर्गोर्द्युतिः प्रभाः ॥४५॥ दीप्ति-
ज्योतिर्महो धाम रश्मिरूर्जो विभावसुः।शीतोष्णप्रा-
यपूर्वत्वौ तद्वन्ताविन्दुभास्करौ ॥४६॥ शशी विधुः
सुधासूतिः कौमुदी कुमुदप्रियः । कलाभृच्चन्द्रमाश्च-
न्द्रः कान्तिमानौषधीश्वरः ॥ ४७ ॥ उडूनि भानि
तारर्क्षं नक्षत्रं तत्पतिर्निशा। क्षणदा रजनी नक्तं
दोषा श्यामा क्षपाकरः ॥ ४८ ॥ तरणिस्तपनो
भानुर्ब्रध्नः पूषार्यमा रविः । तिग्मः पतङ्गो द्युम-
णिर्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः ॥ ४६ ॥ इनः सूर्य-
स्तमोध्वान्तस्तिमिरारिर्विरोचनः । दिनं दिवाह

अंशु गभस्ति किरण कर पाद रुचि भास तेजस् अर्चिष् गो द्युति प्रभा ४५॥दीप्ति ज्योतिष् महस् धामन् रश्मि ऊर्जस् विभावसु ये छः किरणके नाम है। इनके पहले शीत पद और अन्तमे वत् लगा दिया जाय तो प्रायः शीतदीधितिवत् इत्यादि चद्रमाके तथा पहले उष्ण पद जोड़ कर अ-न्तमे वत् लगादेने से उष्णदीधितिवत् इत्यादि सूर्यके नाम होजाते है ॥४६॥ शशिन् विधु सुधासूति कौमुदिन् कुमुदप्रिय कलाभृत् चद्रमस् चन्द्र कान्तिमत् औषधीश्वर ये चद्रमाके नाम है ॥४७॥ उडु भ तार ऋक्ष और नक्षत्र ये तारो के नाम है इनके साथ पतिशब्दका योग करने से उडुपति आदि और निशा क्षणदा रजनी नक्त दोषा श्यामा क्षपा इन रात्रिके नामों के साथ कर जोडने से निशाकर आदिभी चद्रमा के नाम बनते है ॥४८॥ तरणि तपन भानु ब्रध्न पूषन् अर्यमन् रवि तिग्म पतग द्युमणि मार्तंड अर्क ग्रहाधिप ॥ ४६ ॥ इन सूर्य तमोऽरि ध्वान्तारि तिमिरारि विरोचन ये सूर्यके नाम है दिन दिवा अहन् दिवस वासर ये दिनके नाम है

५०॥

दिवसो वासरस्तत्करश्च सः ॥ चक्रवाकाब्जपर्या-
यबन्धुः कुमुदविप्रियः । यमुनायमकानीनजनकः
सविता मतः ॥ ५१ ॥ वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी हयो
धुर्यस्तुरङ्गमः । सप्तिरर्वा हरी रथ्यः सप्ताद्यश्वौ मयू-
खवान् ॥५२॥ खं विहायो वियद्व्योम गगनाकाश-
मम्बरम् । द्यौर्नभोऽन्तरिक्षं च मेघवायुपथोऽप्यऽथ-
॥ ५३ ॥ तच्चरः खेचरस्तद्गः पक्षी पत्री पतत्र्यपि ।
शकुन्तिः शकुनिर्विश्च पतङ्गो विष्किरोऽन्यथा ॥ ५४
जाङ्गलं पिशितं मांसं पलं पेशी च तत्प्रियः । या-
तुधानस्तथा रक्षो रात्र्यादिचर इष्यते ॥ ५५ ॥ सु-

इनका कर (करनेवाला) अर्थात् दिनकर आदि सूर्य होता है ॥ ५० ॥
तथा चक्रवाक(चकवा) और कमल के नामों का प्रिय (प्यारा) चक्रवाक-
प्रिय कमलप्रिय इत्यादि तथा कुमुदका अप्रिय (शत्रु) एवं यमुना यम और
कानीन (कर्ण नामक पाण्डव वंशी राजा) इनका जनक (पैदा करनेवाला)
अर्थात् यमुनाजनक यमजनक कानीनजनक इत्यादि सूर्य माना गया है
अर्थात् ये सब सूर्यके नाम हैं ॥ ५१ ॥ वाह अश्व तुरग वाजिन् हय
धुर्य्य तुरगम सप्ति अर्वन् हरि रथ्य ये घोडे के नाम हैं इनके पहले स-
प्त ये शब्द लगादेनेसे सप्तवाह आदि सूर्यके नाम होजाते हैं ॥ ५२ ॥
ख विहायस् वियत् व्योमन् गगन आकाश अम्बर द्यो नभस् अम्बर अ-
न्तरिक्ष मेघपथ वायुपथ ये आकाश (आसमान) के नाम हैं ॥ ५३ ॥
आकाश मे चर (विचरने वाला) खेचर आदि विद्याधर और आकाशमें
गमन करने वाला खग आदि पक्षी कहलाता है तथा पक्षिन् पत्रिन्
पतत्रिन् शकुन्ति शकुनि वि पतङ्ग विष्कर ^वय ये भी पक्षी (परिन्द) के नाम
हैं ॥ ५४ ॥ जाङ्गल पिशित मांस पल पेशी ये मांसके नाम हैं इनके

^ वयस

तो दितिस्तडिद्‌वान्वा सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः । स्वर्द्यौ स्वर्गोऽथ नाकश्च तद्वासस्त्रिदशो मतः ॥ ५६ ॥ तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च सुनाशीरः शतक्रतुः।प्राचीन-वर्हिः सूत्रामा वज्री चाखराडलो हरिः ॥ ५७ ॥ शत्रु-र्वलस्य गोत्रस्य पाकस्य नमुचेरपि । वृत्रहा च सह-स्राक्षो गीर्वाणेशः पुरन्दरः ॥ ५८ ॥ विडौजाश्चा-प्सरोनाथो वासवो हरिवाहनः । मरुतश्च मरुत्वांश्च वृषा ऐरावणाधिपः ॥ ५९ ॥ शतमन्युस्तुराषाट् च पुरुहूतश्च कौशिकः । शङ्क्रदनोऽथ मघवान्पुलो-मारिर्मरुत्सखः ॥ ६० ॥ काष्ठा ककुब्दिगाशा च दत्तकन्या तथा हरित् । तत्पर्यायपरं योज्यं प्राज्ञैःपा लगजाम्बरम् ॥ ६१ ॥ पवनः पवमानश्च वायुर्वा-

---

साथ प्रियका योग करनेसे जागर्लाप्रिय आदि और यातुधान रक्षस रात्रि-चर इत्यादि राक्षसके नाम है ॥ ५५ ॥ अदितिसुत तडित्वत् सेन्द्र देव सुर अमर ये देव के नाम है स्वर द्यो स्वर्ग नाक और देवोका वास (रहनेका स्थान) अर्थात अदितिसुतवास आदि स्वर्गके नाम है ॥ ५६ ॥ देव अथवा स्वर्गका पति अर्थात् अदितिसुतपति स्वःपति द्योपति इत्यादि तथा शक्र इन्द्र सुनाशीर शतक्रतु प्राचीनबर्हिन् सूत्रामन् वज्रिन् आखडल हरि ॥ ५७ ॥बलशत्रु गोत्रशत्रु पाकशत्रु नमुचिशत्रु वृत्रहन् सहस्राक्ष गीर्वाणेश पुरन्दर ॥ ५८॥ बिडौजस् अप्सरोनाथ वासव हरिवाह-न मरुत् मरुत्वत् वृषन् ऐरावणाधिप ॥ ५९ ॥ शतमन्यु तुराषाह पुरुहूत कौशिक शक्रन्दन मघवत् पुलोमारि मरुत्सख ये इन्द्रके नाम है ॥ ६० ॥ काष्ठा ककुप् दिश् आशा दत्तकन्या हरित् ये दिशा के नाम है इन के

तोऽनिलोमरुत् । समीरणो गन्धवाहः श्वसनश्च सदा गतिः ॥ ६२ ॥ नभस्वान् मातरिश्वा च वेरगयुर्ज्ज चल: ज्जवनस्तथा । प्रभञ्जनोऽस्य पर्यायपुत्रौ भीमाञ्जनात्मजौ ॥ ६३ ॥ तत्सखोऽग्निः शिखी वन्हिः पावकश्चाशुशुक्षणिः । हिरण्यरेता सप्तार्चिर्जातवेदास्तनूनपात् ॥ ६४ ॥ स्वाहापतिर्हुताशश्च ज्वलनो दहनोनलः । वैश्वानरः कृशानुश्च रोहिताश्वो विभावसुः ६५॥ वृषाकपिः सर्मीगर्भो हव्यवाहो हुताशनः । तदादिसूनुः सेनानीः स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥ ६६ ॥ कार्त्तिकेयो विशाखश्च कुमारः षरामुखो गुहः । शक्तिमान् क्रोञ्चभेदी च स्वामी शर वणोद्भवः ॥ ६७ ॥

आगे पाऊ का योग करने से दिग्पाल के, गज का योग करने से दिग्गज के तथा अम्बर का योग करने से नग्न जैनमुनि के नाम बन जाते है ॥६१॥ पवन पवमान वायु वात अनिल मरुत् समीरण गन्धवाह श्वसन सदागति ॥ ६२ ॥ नभस्वत् मातरिश्वन् वेरगयु जवन् चल प्रभजन ये पवन (हवा) के नाम है इन के पुत्र अर्थात् पवनपुत्र पवमानपुत्र इत्यादि भीम और हनुमान्जी कहलाते हैं ॥ ६३ ॥ पवन का सख (मित्र) अर्थात् पवनसख पवमानसख इत्यादि और अग्नि शिखिन् वहनि पावक आशुशुक्षणि हिरण्यरेतस् सप्तार्चिष् जातवेदस् तनूनपात् ॥६४॥ स्वाहापति हुताश ज्वलन दहन अनल वैश्वानर कृशानु रोहिताश्व विभावसु ॥ ६५ ॥ वृषाकपि समीगर्भ हव्यवाह हुताशन ये नाम अग्नि के है। अग्नि के नामों के आगे सूनु जोड दिया जायतो अग्निसूनु आदिक और सेनानी स्कद शिखिवाहन ॥ ६६ ॥ कार्तिकेय विशाख कुमार षरामुख गुह शक्तिमत् क्रौंचभेदिन् स्वामिन् शरवणोद्भव ये नाम कार्त्तिकेय के हैं ॥ ६७ ॥ इन

तत्पिता शङ्करः शम्भुः शिवः स्थाणुर्महेश्वरः । त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ६८ ॥ त्रिपुरारिर्विशालाक्षो गिरिशो नीललोहितः । रुद्रेन्दुमौलियज्ञारिस्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥६९॥ उग्रः शूली कपाली च शिपिविष्टो भवो हरः । उमापतिर्विरूपाक्षो विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥ ७० ॥ भागीरथी त्रिपथगा जान्हवी हिमवत्सुता । मन्दाकिनी द्युपर्यायधुनी गङ्गा नदीश्वरी ॥ ७१ ॥ विधिर्वेधा विधाता च द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः । पद्मपर्याययोनिश्च पितामहविरञ्चिनौ ॥ ७२ ॥ हिरण्यगर्भः स्रष्टा च प्रजापतिस्सहस्रपात् । ब्रह्मात्मभूरनन्तात्मा कस्त-

---

का पिता अर्थात् सेनानीपितृ आदि तथा शकर शम्भु शिव स्थाणु महेश्वर त्र्यम्बक धूर्जटि शर्व पिनाकिन् प्रमथाधिप ॥ ६८ ॥ त्रिपुरारि विशालाक्ष गिरीश नीललोहित रुद्र इन्दुमौलि यज्ञारि त्रिनेत्र वृषभध्वज ॥६९॥ उग्रशूलिन् कपालिन् शिपिविष्ट भव हर उमापति विरूपाक्ष विश्वरूप कपर्दिन् ये नाम महादेवजी के है ॥ ७० ॥ भागीरथी त्रिपथगा जान्हवी हिमवत्सुता मन्दाकिनी तथा स्वर्ग के नामों के साथ धुनी लगा देने से स्वर्धुनी आदि गगा के नाम हो जाते है और गगा के नामो के साथ ईश्वर शब्द का योग करने से भागीरथीश्वर आदि भी महादेव के नाम बन जाते है ॥ ७१ ॥ विधि वेधस् विधातृ द्रुहिण अज चतुर्मुख तथा कमल के नामों के साथ योनि जोड देने से कमलयोनि पद्मयोनि इत्यादि और पितामह विरिञ्चिन् ॥ ७२ ॥ हिरण्यगर्भ स्रष्टृ प्रजापति सहस्रपात् ब्रह्मन् आत्मभू अनन्तात्मन् क ये ब्रह्मा के नाम है इन का पुत्र अर्थात् विधि-

त्पुत्रो हि नारदः ॥ ७३ ॥ कृष्णो दामोदरो विष्णु-
रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः । केशवश्च हृषीकेशः शार्ङ्गी नाराय-
णो हरिः ॥ ७४ ॥ केशी मधुर्बलिर्बाणो हिरण्यक-
शिपुर्मुरः । तदादिसूदनः सौरिः पद्मनाभोऽप्यधो-
क्षजः ॥ ७५ ॥ गोविन्दो वासुदेवश्च लक्ष्मीः श्री-
र्गोमिनीन्दिरा । तत्पतिः शैलभूम्यादिधरश्चक्रधर-
स्तथा ॥७६॥ तत्पुत्रो मन्मथः कामः सूर्पकारिरन
न्यजः । कायपर्यायरहितो मकरो मकरध्वजः ॥७७॥
शिलीमुखः शरो बाणो मार्गणो रोपणः कणः । इ-
षुः काण्डं क्षुरप्रश्च नाराचं तोमरं खगः ॥ ७८ ॥
कार्मुकं धन्व चापं च धर्मं कोदण्डकं धनुः । शिली-

पुत्र आदि नारद के नाम हैं ॥ ७३॥ कृष्ण दामोदर विष्णु उपेन्द्र पुरु-
षोत्तम केशव हृषीकेश शार्ङ्गिन नारायण हरि ॥७४ ॥ केशीसूदन म-
धुसूदन मुरसूदन सौरि पद्मनाभ अधोक्षज ॥ ७५ ॥ गोविन्द वासुदेव और
लक्ष्मी श्री गोमिनी इन्दिरा ये नाम लक्ष्मी के हैं इनका पति अर्थात् लक्ष्मी
पति इत्यादि तथा पर्वत, पृथ्वी इनको धर (धारणकरनेवाला) अर्थात्
जलधर पर्वतधर आदि और चक्रधर ये सब कृष्णजी के नाम हैं
॥ ७६ ॥ इनका पुत्र अर्थात् कृष्णपुत्र दामोदरपुत्र आदि तथा मन्मथ
काम सूर्पकारि अनन्यज और शरीरके नामों से रहित अर्थात्
शरीररहित मदन मकरध्वज ये नाम कामके है ॥ ७७ ॥ शिलीमुख बा-
ण मार्गण रोपण कण इषु काड क्षुरप्र नाराच तोमर खग ये नाम
बाणके हैं ॥७८॥ कार्मुक धन्वन् चाप धर्म्म कोदण्डक धनुष् ये तथा बाण
का आसन अर्थात् शिलीमुखासन शरासन आदि नाम धनुष के हैं धनुषकी
कोणको अटनी कहते हैं ॥ ७९॥ पुष्प सुमनस् फुल्ल लतात प्रसव उद-

मुखादेरासनं तत्कोटिमटिनीं विदुः ॥ ७९ ॥ पुष्पं सुमनसःफुल्लं लतान्तं प्रसवोद्गमौ । प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं तदाद्यस्त्रशरः स्मरः ॥ ८० ॥ स्वान्तमास्वनितं चित्तं चेतोऽन्तः करणं मनः । हृदयं विशिखाकूतं मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥ ८१ ॥ मौर्वी जीवा गुणो गव्या ज्यालिर्भृङ्गः शिलीमुखः । भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो द्विरेफश्च मधुव्रतः ॥ ८२ ॥ मौर्व्यादिप्रान्तमाल्यादि कंदर्पस्यैक्षवन्धनुः । हेतिरस्त्रायुधं शस्त्रपुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः ॥ ८३ ॥ ध्वजा पताका केतुश्च चिन्हं तद्वैजयन्त्यपि । तत्तदन्तो झषाद्यादिः शम्भोर्विघ्नकरः स्मरः ॥ ८४ ॥ कौक्षेयकोसिनिस्त्रिंशः कृपाणः करवालकः । तरवारिर्मंडलाग्रं खड्गनामावलिं

गम प्रसून कुसुम ये फूलके नाम है इनके आगे अस्त्र तथा शर शब्द लगा दिया जाय तो पुष्पास्त्र पुष्पशर आदि कामदेव के नाम होजाते है ॥ ८० ॥

स्वान्त आस्वनित चित्त चेतस् अन्तः करण मनस् हृदय विशिख आकूत ये नाम मन के है इन मे उद्भव (होने वाला) अर्थात् स्वान्तोद्भव आदि काम के नाम होते है ॥ ८२ ॥ मौर्वी जीवा गुण गव्या ज्या ये नाम धनुष की प्रत्यञ्चा (डोर) के है अलि भृङ्ग शिलीमुख भ्रमर षट्पद द्विरेफ मधुव्रत ये नाम भौरेके है ॥ ८३ ॥ अलि (भौरे) के नामो के आगे मौर्वी आदि शब्दो का योग करने से अलिमौर्वी आदि भी कामके नाम बन जाते है कामका धनुष ऐक्षव (गन्नेका) है हेति अस्त्र आयुध शस्त्र ये नाम हथियार के है इनके पहले फूलके नाम लगा दिये जांय तो पुष्प हेति पुष्पास्त्र पुष्पायुध पुष्पशस्त्र इत्यादि नाम भी कामके होजाते हैं ॥८४॥

विदुः ॥ ८५ ॥ अक्षौहिणी बलानीकं वाहिनी साधनं चमूः । ध्वजिनी पृतना सेना सैन्यं दण्डो वरूथिनी ॥ ८६ ॥ कदनं समरं युद्धं संयुगं कलहं रणम् । संग्रामं संपरायाजि संयदाहुर्महाहवम् ॥८७॥ गजो मतङ्गजो हस्ती वारणोऽनेकपः करी । दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी द्विरदेभमतङ्गमाः॥८८॥शुंडालः सामजोनागो मातङ्गः पुष्करीद्विपः।करेणुः सिन्धुरस्तेषु यन्ता यान्ता निषाद्यपि ८६॥ नागाद्यारिः कंठीरवो मृगेन्द्रः केशरी हरिः । व्याघ्रश्चशू(मूक)शार्दूलः शरभोष्टापदोष्टपात् ॥ ६० ॥ क्रोडो वराहो दंष्ट्री च

ध्वजा पताका केतु चिन्ह वैजयन्ती ये नाम ध्वजा के है इनके पहले मच्छ के नाम लगाने से झषध्वज मीनध्वज आदि तथा महादेव के नामोंके साथ विघ्नकर आदि शब्द का योग करने से शंकरविघ्नकर शंभुविघ्नकर आदि भी काम के नाम बन सकते है ॥ ८४ ॥ कौक्षेयक असि निस्त्रिंश कृपाण करवालक तरवारि मंडलाग्र ये खड्ग (तलवार) के नाम हैं ॥ ८५ ॥ अक्षौहिणी बल अनीक वाहिनी साधन चमू ध्वजिनी पृतना सेना सैन्य दंड वरूथिनी ये सेना के नाम है ॥ ८६ ॥ कदन समर युद्ध संयुग कलह रण संग्राम संपराय आजि संयत् महाहव ये युद्ध के नाम हैं ॥ ८७ ॥ गज मतंगज हस्तिन् वारण अनेकप करिन् दन्तिन् द्विरद इभ मतङ्गम ॥८८ ॥ शुंडाल सामज नाग मातंग पुष्करिन् द्विप करेणु सिंधुर ये हाथीके नाम है । इनके साथ यन्तृ यातृ निषादिन् इनशब्दोंको जोड देनेसे गजयन्तृ, गजयातृ गजनिषादिन् इत्यादिक नाम हाथीके चलाने वाले(महावत) के हैं ॥ ८६ ॥ हाथीका अरि- (दुश्मन) अर्थात गजारि इत्यादिक तथा कंठीरव मृगेन्द्र केशिन् हरि ये

घृष्टिः पोत्री च शूकरः । उष्ट्रो मयः शृङ्खलिकःकरभः शीघ्रगामुकः ॥ ६१ ॥ कौलेयकः सारमेयो मण्डलः श्वा पुरोगतिः । जिह्वापो ग्रामशार्दूलः कुक्कुरो रात्रि-जागरः ॥ ६२ ॥ हेम चाष्टापदं स्वर्णं कनकार्जुन-काञ्चनम् । सुवर्णं हिरण्यं भर्म जातरूपं च हाटकम् ॥ ६३ ॥ तपनीयं कलधौतं कार्त्तस्वरं शिलोद्भवम् । रूप्यं रजतं गुलिका शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ६४ वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं स्वार्थं रा द्रविणं धनम् । कस्वरं तत्प-तिं प्राहुः कुवेरं चैकपिङ्गलम् ॥ ६५ ॥ वैश्रवणं राज-राजमुत्तराशापतिं तथा । अलकानिलयं श्रीदं धन-

ये नाम सिंह (शेरके) हैं । व्याघ्र चशूर (चमूर) ये नाम बघेरेके है। शार्दूल शरभ अष्टापद अष्टपात् ये नाम एक प्रकारके हिंसक पशुके है, जो सिंहसे भी बलवान् होता है ॥ ६० ॥ क्रोड वराह दंष्ट्रिन् घृष्टि पोत्रिन् शूकर ये नाम शूर (सुअर) के है । उष्ट्र मय शृखलिक करभ शीघ्रगामुक ये नाम ऊंट के है ॥ ६१ ॥ कौलेयक सारमेय मण्डल श्वन् पुरोगति जिह्वाप ग्रामशार्दूल कुक्कुर रात्रिजागर ये नाम कुत्तेके है ॥ ६२ ॥ हेमन् अष्टापद स्वर्ण कनक अर्जुन काचन सुवर्ण हिरण्य भर्मन् जात-रूप हाटक ॥ ६३ ॥ तपनीय कलधौत कार्तस्वर शिलोद्भव ये नाम सुवर्ण (सोने) के है । रूप्य रजत गुलिका ये चांदीके नाम है । शुक्तिज मौक्तिक ये मोती के नाम है ॥ ६४ ॥ वित्त वस्तु वसु द्रव्य स्व अर्थ रै द्रविण धन कस्वर ये धनके नाम है । इनका पति अर्थात् वित्तपति आदि तथा कुवेर एकपिंगल ॥ ६५ ॥ वैश्रवण राजराज उत्त-राशापति अलकानिलय श्रीद और धनके नामों के साथ "दायक" अथवा "द" के लगादेनेसे वित्तदायकवित्तद इत्यादि ये सब नाम कुवेर (स्वर्ग-

पर्यायदायकम् ॥ ९६ ॥ राष्ट्रं जनपदो निग्रो जना-न्तो विषयः स्मृतः । पूः पुरं पुरी नगरी पत्तनं पुटभेदनम् ॥ ९७ ॥ वक्त्रं लपनमास्यं च वदन्ति वदनं मुखम् । आननं श्रवणं श्रोत्रं श्रवः कर्णं श्रुतिं विदुः॥ ९८ ॥ दृगक्षिचक्षुर्नयनं दृष्टिर्नेत्रं विलोच-नम् । कटाक्षं केकरापाङ्गं विभ्रमस्तस्य वैकृतम्॥९९॥ दोर्दोषा च भुजो बाहुः पाणिर्हस्तः करस्तथा । प्राहु र्बाहुशिरोंसं च हस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥ १०० ॥ दन्तवासोऽधरोप्योष्ठो वर्णितो दशनच्छदः । शिरो-धरो गलो ग्रीवा कण्ठश्च धमनीधमः॥ १०१ ॥ नासा घ्राणमुरोवक्षः कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् । स्तनः पयोधरो

के खजानची) के है ॥ ९६ ॥ राष्ट्र जनपद निग्र जनान्त विषय ये नाम देशके है । पूर् पुर पुरी नगरी पत्तन पुटभेदन ये नाम नगर (शहर) के है ॥९७॥ वक्त्र लपन आस्य वदन मुख आनन ये नाम मुख (मुह) के हैं । श्रवण श्रोत्र श्रव कर्ण श्रुति ये नाम कर्ण (कान) के ह ॥ ९८ ॥ दृश् अक्षि चक्षुष् नयन दृष्टि नेत्र विलोचन ये आख के नाम है । कटाक्ष केकर अपाग विभ्रम ये नेत्रके विकार (निजार) के नाम है ॥९९॥ दोस् दोषा भुज बाहु ये नाम बाहु (बाह) के हैं । पाणि हस्त कर ये हाथके नाम है । बाहुशिरः अंस ये कन्धेके नाम है । हस्तशाखा यह हाथ की अगुली (आगली) का नाम है ॥ १०० ॥ दन्तवास अधर ओष्ट दशनच्छद ये नाम होटके हैं । शिरोधर गल ग्रीवा कठ धमनिध-म ये नाम कंठ (गले) के है ॥ १०१ ॥ नासा घ्राण ये दो नाम नाकके हैं । उरस् वक्षस् ये नाम छाती के है । कुक्षि यह नाम कूखका है । ज-

कुचो वक्षोज इति वर्णितः ॥ १०२ ॥ कटिर्नितम्बः श्रोणिश्च जघनं जानु जन्हु च । चलनं चरणं पादं क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदं विदुः ॥ १०३ ॥ शिरो मूर्द्धोत्तमाङ्गकं प्रारभ्यं प्रेरितेरितम् । वाग्वचो वचनं वाणी भारती गीः सरस्वती ॥१०४॥ सिंहद्विपघने गर्जो हेषाश्वे बृंहितं गजे । स्फीत्कृतं धेनुकलभे स्तनितं जलदे तथा ॥१०५॥ स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे भटे घृष्टौ च हूङ्कृतम् । शीत्कृतं भणितं कामे खूत्कृतं शृङ्खलायुधे ॥१०६ ॥ मञ्जीरकं तुलाकोटि नूपुरं तत्र झङ्कृतम् । झाङ्कृतं

ठर उदर ये पेटके नाम है । स्तन पयोधर कुच वक्षोज ये नाम स्तन (बोबे) के है ॥ १०२ ॥ कटि यह नाम कड़ का है । नितम्ब यह नाम कटिके पिछले हिस्सेका है । श्रोणि जघन ये कटिके अगले हिस्सेके नाम है । जानु जन्हु ये नाम गोडे (घुटने) के है । चलन चरण पाद क्रम अंघ्रि पद ये नाम पगके है ॥ १०३ ॥ शिरस् मूर्द्धन् उत्तमाङ्गक ये नाम मस्तक (शिर) के है । प्रारभ्य प्रेरित ईरित ये नाम प्रेरणा किये हुयेके है । वाच् वचस् वचन वाणी भारती गिर् सरस्वती ये नाम वाणी (वचन) के है ॥ १०४ ॥ सिह हाथी और बद्दलकी आवाज का "गर्ज" कहतेहै । "हेषा" घोडेकी आवाज है । "बृंहित" यह हाथीकी बोली नाम है । "स्फीत्कृत" यह गायकी तथा हाथीके बच्चेकी बोली का नाम है । स्तनित यह बद्दल के शब्द का नाम है ॥ १०५ ॥ रथकी आवाजको चीत्कृत कहतेहै । मत्र भट और घिसनेकी जो आवाज है वह "हुकृत" कहलातीहै । शीत्कृत भणित ये मैथुनके शब्द के नाम है । "खूत्कृत" यह साकल और शस्त्रोंके शब्दका नाम है ॥ १०६ ॥ मञ्जीरक तुलाकोटि नूपुर ये नेवरीके नाम है । इनकी जो

मरुति क्रौञ्चहंसयोः केङ्कृतं मतम् ॥ १०७ ॥ प्रतीतं संस्तुतं लब्धं दृष्टं परिचितं हतम् स्मृतं स्थितं दशमीस्थं परासुं च मृतं विदुः ॥ १०८ ॥ खेदो द्वेष्योऽप्यमर्षश्च रुट्कोपक्रोधमन्यवः। हर्षः प्रमोदः प्रमदो मुत्तोषानन्दमुत्सवः॥१०९॥ कृपानुकम्पानुक्रोशो हन्तोक्तिः करुणा दया। शेमुषी धिषणा प्रज्ञा मनीषा धीस्तथाशयः ॥ ११० ॥ प्राज्ञो मेधादिमान्विद्वानभिरूपो विचक्षणः। पण्डितः सूरिराचार्यो वाग्मी नैयायिकः स्मृतः ॥ १११ ॥ पारिषद्यो बुधः सभ्यः सदस्यः सत्सभोचितः। आस्थानाधिपती

आवाज होतीहै उसको झङ्कृत कहते है। हवाके शब्दको झाङ्कृत कहतेहै। क्रौंच और हसकी बोली का नाम केङ्कृत है ॥ १०७ ॥ प्रतीत संस्तुत लब्ध दृष्ट परिचित स्मृत ये नाम जाने हुएके है। हत संस्थित दशमीस्थ पराशु ये नाम मृतक (मरेहुए) के है ॥ १०८ ॥ खेद द्वेष अमर्ष रुष् कोप क्रोध मन्यु ये नाम क्रोध (गुस्से) के है। हर्ष प्रमोद प्रमद मुद् तोष आनन्द उत्सव ये नाम हर्ष (खुशी) के है ॥ १०९ ॥ कृपा अनुकम्पा अनुक्रोश हतोक्ति करुणा दया ये नाम दयाके है। शेमुषी धिषणा प्रज्ञा मनीषा धी आशय ये नाम बुद्धिके है ॥ ११० ॥ प्राज्ञ मेधावत् विद्वस् अभिरूप विचक्षण पण्डित सूरि आचार्य वाग्मिन् नैयायिक ये नाम पंडितके है ॥ १११ ॥ पारिषद्य बुध सभ्य सदस्य सदसुचित सत्सभोचित ये नाम सभाके लायक जो मनुष्य हो उसकेहै। सभाके नामोके साथ अधिपति शब्दके लगानेसे आस्थानाधिपति सभाधिपति इत्यादि राजाके नाम होजातेहे। राजाके नामोके साथ "सूप" शब्दका योग

राजा राजसूयो नृपक्रतुः ॥ ११२॥ विष्टरं मल्लिकाँ पीठमासन्दीमासनं विदुः। विष्टपं भुवनं लोको जगत्तस्य पतिर्जिनः ॥ ११३ ॥ सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन् केवली धर्मचक्रभृत्। तीर्थङ्करस्तीर्थकरस्तीर्थकृद्दिव्यवाक्पतिः११४चेलं निवसनं वासश्चीरमम्बर मंशुकम् वर्षीयान्वृषभो ज्यायान् पुरुषाद्यः प्रजापतिः। ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा गौतमो नाभिजोऽग्रजः ॥११५ सन्मतिर्महतिर्वीरो महावीरोन्त्यकाश्यपः॥ नाथान्वयो वर्द्धमानो यत्तीर्थमिह सांप्रतम् ॥ ११६ ॥ वस्त्राद्यन्तदिगाद्यादिसंज्ञितो वृषभेश्वरः ॥ ११७ ॥ कुंकुमं रुधिरं रक्तं कस्तूरी मृगनाभिजा। कर्पूरं घनसारं च हिमं सेवेत पुण्यवान् ॥ ११८ ॥

करनेसे राजसूय इत्यादि नाम राजाके यज्ञके होतेहै ॥११२॥ विष्टर मल्लिका पीठ आसन्दी आसन ये नाम आसनके है। विष्टप भुवन लोक जगत् ये नाम जगत्के है। इनके पति अर्थात् विष्टपपति आदि श्रीजिनेन्द्र होते हैं ॥११३॥ सर्वज्ञ वीतराग अर्हन् केवलिन् धर्मचक्रभृत् तीर्थंकर तीर्थकर तीर्थकृत् दिव्य वाक्पति ये श्रीजिनेन्द्र भगवान्के नाम है ११४ वर्षीयस् वृषभ ज्यायस् पुरुषाद्य प्रजापति ऐक्ष्वाकु काश्यप ब्रह्मन् गौतम नाभिज अग्रज ये नाम श्री आदिजिनेन्द्रके है ॥ ११५ ॥ सन्मति महतिवीर महावीर अन्त्यकाश्यप नाथान्वय वर्द्धमान ये श्रीमहावीर तीर्थंकरके नाम हैं। जिनका कि तीर्थ वर्त्तमानमें है॥११६॥ चेल निवसन वास चीर अम्बर अंशुक ये नाम वस्त्र (कपड़े) के हैं। इन वस्त्रके नामोके पहले दिशाके नाम लगा देनेसे दिगम्बर दिग्वसन आशाम्बर इत्यादि श्रीदिगम्बर मुनी-

समालम्भोऽङ्गरागश्च प्रसाधनविलेपनम् । भूषणाभरणं रुच्यं माल्यं माला गुणि स्रजम् ॥ ११९ ॥ मेखला रशना काञ्ची हेमपर्यायसूत्रकम् । श्रोणिबिम्बे कटीसूत्रं मानसूत्रमिवाहितम् ॥ १२० ॥ मदिरां मद्यमैरेयं सीधु कादम्बरीमिराम् । प्रसन्नां वारुणीं हालां मधुवारां सुरां विदुः ॥ १२१ ॥ शुण्डासवस्तद्विधायी शौण्डो गद्यत मद्यपः । शक्तोऽत्तद्यूतपानेषु विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥ १२२ ॥ सर्पिर्हैयङ्गवीनाज्यं दुग्धं क्षीरामृतं पयः । उदश्वि-

श्वरोंके नाम बनजातेहै ॥११७॥ कुकुम रुधिर रक्त ये केसरके नाम है । कस्तूरी मृगनाभिजा ये कस्तूरीके नाम हैं । कर्पूर घनसार हिम ये नाम कपूरके हैं । इनका सेवन पुण्यवान् जीव करताहै ॥ ११८ ॥ समालभ अगराग प्रसाधन विलेपन ये नाम उस पदार्थके हैं जो शरीरके लगाया जाताहै जैसेकि घिसा हुआ केसर चंदन आदि । भूषण आभरण रुच्य ये नाम गहनेके है । माल्य माला गुणि स्रक् ये पुष्पमालाके नाम है ॥ ११९ ॥ मेखला रशना काची तथा सोनेके नामोंके आगे सूत्र के लगादेनेसे हेमसूत्र स्वर्णसूत्र आदि कणकर्ताके नाम है । कटिमें जो कणकती पहनी जातीहै वह ऐसी सोहतीहै मानो कटिके नापनेका डोरा ही है ॥ १२० ॥ मदिरा मद्य मैरेय सीधु कादबरी इरा प्रसन्ना वारुणी हाला मधुवारा सुरा ये नाम मदिराके हैं ॥ १२१ ॥ शुडा यह आसव अर्थात् एक प्रकारकी मदिराका नाम है, उसको बनानेवालेका नाम शौंड है । मद्यके पीनेवालेकोभी शौंड कहतेहै । तथा जो पासागेरनेमें, जुवा खेलनेमें और मदिरापानमे समर्थ (चतुर) हो वह भी शौंड कहलाताहै क्योंकि शब्दोंकी पद्धति विचित्र है अथवा इस शब्दपद्धतिका आश्चर्य है॥ १२२ ॥

न्मथितं तक्रं कालसेयं पिबेद्गुरुः ॥ १२३ ॥ प्रायो वयोदशानेहा पूर्णं यौवनिकं विदुः । तारुण्यं यौवनं चान्त्यो वार्द्धीनः स्थविरो मतः ॥ १२४ ॥ वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्यादाम्नायः सन्ततिः कुलम् । ओघो वर्गश्च सन्तानः काव्यमेव कवेःस्थितिः॥१२५ हंसो मरालश्चक्राङ्गो हंसवाहः सनातनः । मयूरो बर्हिणः केकी शिखी प्रावृषिकस्तथा ॥ १२६ ॥ नीलकण्ठः कलापी च शिखण्डी तत्पतिर्गुहः । वरटा वारली हंसी कोक ईहामृगो वृकः १२७हरिणो मृगः पृषतस्तदङ्कः शर्वरीकरः।पन्नगोहिर्विषधरो लेलीहानो

सर्पिष् हैयङ्गवीन आज्य ये घृत (घी) के नाम हैं । दुग्ध क्षीर अमृत पयस् ये नाम दूधके हैं । उदश्वित् मथित तक्र कालसेय ये नाम छाछ (मठे) के हैं । इसको मोटा मनुष्य पीवे ॥ १२३ ॥ वयःपूर्ण, दशापूर्ण अनेहापूर्ण यौवनिक ये नाम जवान मनुष्यके हैं । तारुण्य यौवन ये जवानीके नाम हैं । अन्त्य वार्द्धी स्थविर ये नाम बुड्ढेके हैं ॥ ॥ १२४ ॥ वंश अन्वय अन्ववाय आम्नाय संतति कुल ओघ वर्ग संतान ये कुल (खान्दान) के नाम हैं । काव्य ही कवि की स्थिति है ॥१२५॥ हंस मराल चक्राङ्ग ये नाम हंसके हैं। हंसके आगे वाहके लगानेसे हंसवाह आदि ब्रह्माजीके नाम होजातेहैं । मयूर बर्हिण केकिन् शिखिन् प्रावृषिक ॥१२६॥ नीलकंठ कलापिन् शिखण्डिन् ये मोरके नाम हैं । इनके पति अर्थात् मयूरपति इत्यादि कार्त्तिकेयजी के नाम हैं । वरटा वारली हंसी ये नाम हंसनीके हैं । कोक ईहामृग वृक ये नाम कोकके हैं ॥ १२७ ॥ हरिण मृग पृषत ये नाम हिरणके हैं । इनके आगे अंक जोड देनेसे

भुजङ्गमः १२८ नागोरगौ फणी सर्पस्तद्वैरी विनतात्मजः । सुपर्णो गरुडस्तार्क्ष्यो गरुत्मान् शकुनीश्वरः १२६ इन्द्राजिन्मन्त्रपूतात्मा वैनतेयो विषत्त्रयः । खमिन्द्रियं हृषीकं च श्रोतोऽक्षं करणं विदुः ॥१३०॥ पुण्यं भाग्यं च सुकृतं भागधेयं च सत्कृतम् । अघमंहश्च दुरितं पाप्मा पापं च किल्विषम् ॥ १३१ ॥ वृजिनं कलिलमेनो दुःकृतं तज्जयी जिनः । सदनं सद्म भवनं धिष्ण्यं वेश्माथ मन्दिरम् ॥ १३२ ॥ गेहं निकेतनागारं निशान्तं निर्वृतं गृहम् । वसत्यवसथावासं स्थानं धामास्पदं पदम् ॥ १३३ ॥ निकायं निलयं पस्त्यं शरणं विदुरालयम् । खेयं खातं च परिखा वप्रं स्याद्धूलिकुट्टिमम् ॥१३४॥ प्राकारः परिधिः शालः प्रतोली

हरिणाङ्क (हरिणकोचिन्हवाला) इत्यादि चन्द्रमाके नाम है । पन्नग अहि विषधर लेलिहान भुजङ्गम ॥१२८॥ नाग उरग फणिन् सर्प ये नाम सर्प (सांप) के है । इनका वैरी अर्थात् पन्नगवैरिन् इत्यादि और सुपर्ण गरुड तार्क्ष गरुत्मत् शकुनीश्वर ॥ १२६ ॥ इन्द्राजित् मन्त्रपूतात्मन् वैनतेय विषत्त्रय ये सब गरुडके नाम है । ख इन्द्रिय हृषीक श्रोत अक्ष करण ये इन्द्रियके नाम हैं ॥ १३० ॥ पुण्य भाग्य सुकृत भागधेय सत्कृत ये नाम पुण्यके हैं । अघ अहस् दुरित पाप्मन् पाप किल्विष ॥ ॥ १३१ ॥ वृजिन कलिल एनस् दुःकृत ये पापके नाम हैं । अघजयिन् (पापकोजीतनेवाले) इत्यादि श्रीजिनेन्द्र कहलाते हैं । सदन सद्म भवन धिष्ण्यत वेश्मन् मंदिर ॥ १३२ ॥ गेह निकेतन आगार निशात निवृत गृह वसति अवसथ आवास स्थान धामन् आस्पद पद ॥ १३३ ॥ नि-

गोपुराकृतिः। प्रासादसौधहर्म्याणि निर्व्यूहो मत्तवारणम् ॥ १३५ ॥ वातायनं मत्तालम्बमालम्ब्यं मुखमासताम् । समः सवर्णः सजातिः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ १३६ ॥ तुल्यः सधर्मः सरूपस्तुलाकक्षोपमाभिधा। विन्मन्यो विद्यमानश्च[?]गुरुस्थानोऽम्बुजाननः ॥ १३७ ॥ सिंहनादीति पर्यायमुपमानेषु योजयेत्। व्यपदेशं निभं व्याजं पदं व्यतिकरं छलम् ॥१३८॥ छद्मवृत्तान्तमुत्प्रेक्षाशब्दमन्यं चनिर्णयेत् । व्रातः पूगः समाजश्च समूहः सन्ततिर्व्रजः ॥ १३९ ॥ व्यूहो निकायो निकरो निकुरम्बं कदम्बकम् । ओघः समुदयः सङ्घः सङ्घातः समितिस्ततिः ॥ १४० ॥

काय निलय पस्त्य शरण आलय ये सब घरके नाम हैं । खेय खात परिखा ये खाईके नाम हैं । वप्र धूलिकुट्टिम ये खाई पर जो मिटटी का कूट होता है उसके नाम हैं ॥ १३४ ॥ प्राकार परिधि साल ये नाम कोटके हैं । प्रतोली यह गली का नाम है । गोपुर यह नगर के द्वारका नाम है। प्रासाद*सौध*हर्म्य*ये महलके नाम हैं । निर्व्यूह यह नाम खूटी का है । मत्तवारण यह नाम बराडे का है ॥ १३५ ॥ वातायन मत्तालम्ब ये नाम झरोखेके है । सम सवर्ण सजाति सदृक्ष सदृश सदृक् ॥१३६॥ तुल्य सधर्म सरूप तुला कक्षा उपमा ये नाम समान (बराबर) के है। विन्मन्य विद्यमान गुरुस्थान अम्बुजानन ॥ १३७ ॥ सिंहनादिन् इत्यादि उपमान पर्यायोंमे इनको लगाने चाहियें । व्यपदेश निभ व्याज पद व्यतिकर छल ये नाम छलके हैं ॥ १३८ ॥ छद्म वृत्तान्त यह उत्प्रेक्षा का नाम है । इसी प्रकार और शब्द भी बना लेना चाहिये । व्रात पूग समाज समूह सन्तति व्रज ॥१३९॥ व्यूह निकाय निकर निकुरम्ब कद-

१ देव और राजाके मकानको प्रासाद कहते हैं २ [illegible] घरको सौध ३ धनवनोके घर को हर्म्यकहेतहे

निचयः प्रकरः पङ्क्तिः पशूनां समजो व्रजः। समीपाभ्यासमासन्नमभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ॥ १४१ ॥ अविदूरं च निकटमवलग्नमनन्तरम्। जित्या हलिर्हलं सीरं लाङ्गलं तत्करो बलः ॥ १४२ ॥ रेवतीदयितो नीलवसनः केशवाग्रजः। अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः श्वेतवाजी कपिध्वजः ॥ १४३ ॥ गाण्डीवी कार्मुकी सव्यसाची मध्यमपाण्डवः। वृषसेनः सुनिर्मोको दैत्यारिः शक्रनन्दनः ॥ १४४ ॥ कर्णशूली किरीटी च शब्दभेदी धनञ्जयः। समवर्त्ती यमः कालः कृतान्तो मृत्युरन्तकः ॥ १४५ ॥ धर्मराजः पितृपतिः सूरसूनुः परेतराट्। यमुनो यमुनाभ्राता श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ॥ १४६ ॥ कु-

---

म्बक ओघ समुदय सव सवात समिती ताति ॥१४०॥ निचय प्रकर पक्ति ये नाम समूह (थोक) के हैं। पशुओंका जो समूह है वह व्रज कहलाताहै। समीप अभ्यास आसन्न अभ्यर्ण सन्निधि ॥१४१॥ अविदूर निकट अवलग्न अनंतर ये नाम समीप (पास) के है। जित्या हलि हल सीर लाङ्गल ये नाम हलके है। जित्याकर (हल जिसके हाथमें है) इत्यादि ॥ १४२ ॥ तथा रेवतीदयित नीलवसन केशवाग्रज ये बलदेवजीके नाम हैं। अर्जुन फल्गुन जिष्णु श्वेतवाजिन् कपिध्वज ॥१४३॥ गाडीविन् कार्मुकिन् सव्यसाचिन् मध्यमपाडव वृषसेन सुनिर्मोक दैत्यारि शक्रनदन ॥ १४४ ॥ कर्णशूलिन् किरीटिन् शब्दभेदिन् धनजय ये नाम अर्जुनजीके हैं। समवर्तिन् यम काल कृतान्त मृत्यु अन्तक ॥१४५॥ धर्मराज पितृपति सुरसुनु परेतराज् यमुन यमुनाभ्रातृ श्राद्धदेव दण्डभृत् ये नाम यम के

रुकीचकयो शत्रुर्वायुपुत्रो वृकोदरः । धर्मा-
त्मजोऽजातरिपुः कौन्तेयो भरतान्वयः ॥ १४७ ॥
कौरव्यो राजलक्ष्मा च सोमवंश्यो युधिष्ठिरः । कृष्णं
नीलासितं कालं धूमं धूम्रमलिप्रभम् ॥ १४८ ॥
तमोऽन्धकारतिमिरं ध्वान्तं संतमसं तमः । श्वेतार्जुनौ
शुचिः श्येतो वलत्तं सितपाण्डुरम् ॥ १४९ ॥
शुक्लावदातं धवलं पाण्डुः शुभ्रं शशिप्रभम्॥ लो-
हितं रक्तमाताम्रं पाटलं विशदारुणम् ॥ १५० ॥
गौरं पीतं हरिद्राभं पालाशं हरितं हरित् । हरिणी
लोहिनी शोणी गौरी श्येनी पिशङ्ग्यपि ॥ १५१ ॥
सारङ्गी शवली काली कल्माषी नीलपिङ्गली । परा-
गं मधु किञ्जल्कं मकरंदं च कौसुमम् ॥ १५२ ॥

है । कुरुशत्रु तथा कीचकशत्रु वायुपुत्र वृकोदर ये नाम भीमजी के हैं । धर्मात्मज अजातरिपु कौन्तेय भरतान्वय ॥ १४७ ॥ कौरव्य राजयक्ष्मा सोमवश्य युधिष्ठिर ये नाम युधिष्ठिरजीके हैं । कृष्ण नील असित काल धूम धूम्र अलिप्रभ ये नाम कालेके है ॥ १४८ ॥ तमस् अन्धकार तिमिर ध्वान्त सन्तमस् तम ये नाम अन्धकार के हैं । श्वेत अर्जुन शुचि श्येत वलत्त सित पाण्डुर ॥१४९॥ शुक्ल अवदात धवल पाण्डु शुभ्र शशि प्रभ ये नाम सफेदकेहै । लोहित रक्त आताम्र ये लालके नाम हैं । जो सेफद और लाल शामिल होताहै वह पाटल कहलाताहै ॥ १५० ॥ गौर पीत हरिद्राभ ये नाम पीलेके है । पालाश हरित हरित् ये नाम हरे (सब्ज) के है । हरिणी लोहिनी शोणी गौरी श्येनी पिशङ्गी ॥ १५१ ॥ सारङ्गी शवरी काली कल्माषी नीलपिङ्गली ये नाम रंगके भेदोसे स्त्रीके भेदों

उपचाराद्रजः पांसुं रेणुं धूलीं च योजयेत् । कलङ्कावद्यमलिनं किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम् ॥१५३॥ निर्वार्धमधमं पङ्कं मलीमसमपि त्यजेत्। जनोदाहरणं कीर्त्तिं साधुवादं यशो विदुः ॥ १५४ ॥ वर्णं गुणावलिं ख्यातिमवदानं तु साहसम् । प्रेष्यादेशनिदेशाज्ञानियोगाः शासनं तथा ॥ १५५ ॥ संदेशः प्रिययोर्वार्त्ता प्रवृत्तिः किंवदन्त्यपि । कठोरं कठिनं स्तब्धं कर्कशं परुषं दृढम् ॥ १५६ ॥ अश्लीलं काहलं फल्गु कोमलं मृदु पेशलम् । प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं नवं नूतनमाग्रिमम् ॥ १५७ ॥ पु-

के हैं। पराग मधु किञ्जल्क मकरन्द कौसुम ॥१५२ ॥ तथा उपचारसे पुष्पके नामोंके साथ रजन् पांशु रेणु तथा धूलि इन मेंसे किसी शब्दका योग करादिया जाय तो पुष्परजम् आदि भी मकरन्द (फूलके सहित) के नाम हैं। कलङ्क अवद्य मलिन किञ्जल्क लक्ष्मन् लाञ्छन ॥१५३॥ निर्वार्ध अधम पङ्क मलीमस ये नाम कलङ्क के हैं इस कलङ्कको त्यागना चाहिये अर्थात् इस लोक में आने न लगाना चाहिये । जनोदाहरण कीर्त्ति साधुवाद यशस् वर्ण गुणावलि ख्याति अवधान साहस ये कीर्ति के नाम हैं। प्रेष्य आदेश निदेश आज्ञा नियोग शासन ये हुक्मके नाम हैं ॥ १५५ ॥ प्यारोंकी परस्पर वार्त्ता (समाचार)है वह संदेश, तथा जगत् की वार्त्ता प्रवृत्ति और लोगोंकी अफवाह किंवदन्ती कहलातीहै । कठोर कठिन स्तब्ध कर्कश परुष दृढ ये कठोर (कठिन अर्थात् करड़े) के नाम हैं ॥ १५६ ॥ अश्लील काहल फल्गु ये नाम निःसार (वे मतलब) के हैं। कोमल मृदु पेशल ये मुलायमके नाम है । प्रत्यग्र साम्प्रत नव्य नव नूतन आग्रिम ये नाम नयेके है ॥ १५७ ॥ पुराण जरठ जीर्ण प्राक्तन गु-

राणं जरठं जीर्णं प्राक्तनं सुचिरन्तनम् । भो रे हंहो हे चामन्त्रे कश्चित्किञ्चन संशये ॥ १५८ ॥ द्राक्चणोऽह्नाय सपदि निमेषे मा न खल्वलम्। उच्चैरुच्चावचं तुङ्गमुच्चमुन्नतमुच्छ्रितम् ॥ १५६ ॥ नीचं न्यगातनं कुब्जं नीचैर्ह्रस्वं नयेत्परम् । अमा सह समं साकं सार्द्धं सत्रा सजूः समाः ॥ १६० ॥ सर्वदा सततं नित्यं शश्वदात्यन्तिकं सदा । शृङ्गी द्वतिहरिर्नाथहरिस्तिर्यञ्चशृङ्गिणः ॥ १६१ ॥ गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र महिषी नाम देहिका । वियोगं मदनावस्थाविरहं फुल्लकं विदुः ॥ १६२ ॥ प्रेमाभिलाषमालम्बं रागं स्नेहमतःपरम् । संहितं सहितं युक्तं संपृक्तं संभृतं युतम् ॥ १६३ ॥ संस्कृतं समवेतं च प्राहुरन्वी-

---

चिरन्तन ये पुराणके नाम है । भो रे हहो हे ये आमन्त्र अर्थात् किसीके बुलानेमें है । काश्चिन् किञ्चन ये संशय के अर्थमें हैं ॥ १५८ ॥ द्राक चणे अह्नाय सपादि ये नाम तत्कालके है । उच्चस् उच्चावच तुङ्ग उच्च उन्नत उच्छ्रित ये ऊंचेके नाम है ॥ १५६ ॥ नीच न्यगातन कुब्ज नीचैस् ह्रस्व ये नीचेके नाम है । अमा सह सम् साक सार्द्ध सत्रा सजुष ये साथके नाम है ॥ १६० ॥ सर्वदा सतत नित्य शश्वत् आत्यन्तिक सदा ये सदा (हमेशा) के नाम है । शृंगी द्वतिहरि नाथहरि ये सींगवाले तिर्यञ्च के नाम हैं॥१६१॥गो चतुष्पात् पशु ये नाम पशुके है । महिषी देहिका ये भैंसके नाम हैं । कामकी अवस्थामे जो विरह (जुदाई) होताहै उसको वियोग तथा फुल्लक ? कहतेहैं ॥ १६२ ॥ प्रेम अभिलाष आलम्ब राग स्नेह ये नाम स्नेह (मुहब्बत) केहै संहित सहित युक्त सम्पृक्त संभृत

तमन्वितम् । वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः मार्गः प्रचरसञ्च
रौ ॥ १६४ ॥ त्रिमार्गनामगा गङ्गा घोषो गोम-
ण्डलं ब्रजः । कृती नदीष्णो निष्णातः कुशली
निपुणः पटुः ॥ १६५ ॥ क्षुणाणः प्रवीणः प्रगल्भः
कोविदश्च विशारदः । विदग्धश्चतुरो धूर्तश्चाटुकृ-
त्कितवः शठः ॥ १६६ ॥ क्वापि नागरिको ज्ञेयो
गोत्रं संज्ञाङ्कनाम तत् । मुग्धो मूढो जडो नेडो मूको
मूर्खश्च कद्वदः ॥ १६७ ॥ स देवानां प्रियोऽप्राज्ञो
मन्दो धीनामवर्जितः । षष्ठिकः कलमः शालिर्व्रीहिः
स्तम्बकरिस्तथा ॥ १६८ ॥ (वत्सः सकृत्करिर्जातः
पोडः षड्दर्शनः स्मृतः) ❋ । शौण्डीरो गर्वितस्तब्धो
मानी चाहङ्कृदुद्धतः ॥१६९ ॥ उदग्रीव उद्धरो दृप्तो

युत ॥ १६३ ॥ संस्कृत समन्वित अन्वीत अन्वित ये नाम सहितके हैं । वर्त्मन् अध्वन् सरणि पथिन् मार्ग प्रचर सञ्चर ये रास्तेके नाम हैं ॥ १६४ ॥ यदि इन मार्गके नामोंके पूर्व त्रिशब्द और अन्तमें 'गा' का योग करादिया जाय तो त्रिमार्गगा इत्यादि गंगानदीके नाम बन जाते हैं । घोष गोमण्डल व्रज ये नाम गोके बाड़ेके है । कृतिन् नदीष्ण निष्णात कुशल निपुण पटु ॥ १६५ ॥ क्षुणाण प्रवीण प्रगल्भ कोविद विशारद विदग्ध चतुर ये नाम चतुरकेहै । धूर्त चाटुकृत् कितव शठ ये नाम धूर्त के हैं ॥१६६॥ कहीं कहीं नागरिक कोभी धूर्तका ही नाम कहतेहैं । गोत्र सञ्ज्ञा अङ्क नाम ये नामके नाम है । मुग्ध मूढ जड नेड मूक मूर्ख कद्वद १६७ देवानांप्रिय अप्राज्ञ मद तथा बुद्धिके नामोंसे वर्जित (रहित) अर्थात् धीवर्जित इत्यादि मूर्खके नामहै । षष्टिक कलम शालि व्रीहि स्तम्बकारि ये शालिकेनाम हैं । शौण्डीर गर्वित स्तब्ध मानिन् अहंकृत् उद्धत ॥१६९॥

❋ इसका अर्थ सङ्कत नहींहुआ

नीचश्च पिशुनोऽधमः । चौरैकागारिकस्तेनास्तस्कर: प्रतिरोधकः ॥ १७० ॥ निशाचरो गूढचरो हारकः पारिपान्थिकः । प्रस्तरोपलपाषाणदृषद्धातुशिलाघनाः॥१७१॥ तत्र जातमयो लोहं शातकुम्भं नयेत्परम् । साधीयोऽत्यर्थमत्यन्तं नितान्तं सुष्ठु वै भृशम् ॥१७२॥ स्फुटं साधु खलु स्पष्टं विशदं पुष्कलामलम् ।चित्राश्चर्याद्भुतं चोद्यं विस्मयः कौतुकोऽप्यहो ॥ १७३ ॥ अभियोगोद्यमोद्योगा उत्साहो विक्रमो मतः। क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं हीनं जीर्णं च वैरिणाम् ॥१७४॥ शीर्णावसानंन्यूनं च धैर्यं शौर्यञ्च पौरु-

उद्ग्रीव उद्धर इतये अहंकारी (घमंडी) के नाम हैं। नीच पिशुन अधम ये नीचके नाम हैं। चौर एकागारिक स्तेन तस्कर प्रतिरोधक ॥ १७० ॥ निशाचर गूढचर हारक पारिपान्थिक ये चोरके नाम हैं। प्रस्तर उपल पाषाण दृषत् धातु शिला घन ये नाम पत्थर के हैं॥ १७१ ॥ उस पाषाणसे जात (पैदा होनेवाला) अर्थात् प्रस्तरजात इत्यादि तथा अयस् लोह ये नाम लोहेके हैं। तथा पाषाणके नामोंके साथ जात तथा उद्भव लगादिया जाय तो प्रस्तरजात प्रस्तरोद्भव इत्यादि सुवर्ण के नाम बनजातेहैं । साधीयम् अत्यर्थ अत्यन्त नितान्त सुष्टु भृश ये नाम बहुतके हैं ॥ १७२ ॥ स्फुट साधु खलु स्पष्ट विशद पुष्कल अमल ये नाम स्पष्ट (साफ) के हैं। चित्र आश्चर्य अद्भुत चोद्य विस्मय कौतुक ये आश्चर्यके नाम हैं ॥ १७३ ॥ अभियोग उद्यम उद्योग उत्साह विक्रम उद्यम (कोशिश)के नाम हैं । क्षाम क्षान्त कृश क्षीण हीन जीर्ण ॥१७४॥ शीर्ण अवसान न्यून ये नाम दुबलेके हैं । धैर्य शौर्य पौरुष ये

१ क पुस्तके " हारिक " ख पुस्तके च " हेरिक इति पाठ

षम् । रहोऽनुरहसोपांशु रहस्यंचभिनत्ति कः॥१७५॥ कीनाशः कृपणो लुब्धो गृध्नो दीनोऽभिलाषुकः॥ क्षिप्राशुमंक्ष्वरं शीघ्रं सहसा झटिति द्रुतम् ॥१७६॥ तूर्णं जवः स्यदो रंहो रहो वेगस्तरो लघुः। प्राध्वंकृतः सितो बद्धः सन्धां नीतो नियन्त्रितः ॥ १७७ ॥ नियमितः शृंखलितः पिनद्धः पाशितो रिपुः । कान्तं कमनं कम्रं च कमनीयं मनोहरम् ॥ १७८ ॥ अभिरामं रमणीयं रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् । चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं प्रशस्तं हृद्यबन्धुरम् ॥ १७९ ॥ दर्शनीयं मनोज्ञं च चित्तपर्यायहारि च । अवस्यायं तुषारं च प्रालेयं तुहिनं हिमम् ॥१८०॥ नीहारं तत्करं विद्धि

धीरजके नाम हैं । रहस् अनुरहस उपांशु रहस्य ये गुप्त (छिपे हुए) के नाम हैं । किसीके गुप्त कार्यको कोई भी सज्जन नहीं प्रगट करता है ॥ १७५ ॥ कीनाश कृपण लुब्ध गृध्न दीन अभिलाषुक ये कृपण (कजूस) हैं । चिप्र आशु मङ्क्षु अर शीघ्र सहसा झटिति द्रुत ॥ १७६ ॥ तूर्ण जव स्यद रहस् रहस् वेग तर लघु ये नाम शीघ्र (जल्द) के है। प्राध्वकृत सित बद्ध संधानीत नियन्त्रित ॥ १७७ ॥ नियमित शृखलित पिनद्ध पाशित ये बांधे (कैदकिये हुये) के नाम हैं कान्त कमन कम्र कमनीय मनोहर ॥ १७८ ॥ अभिराम रमणिय रम्य सौम्य सुन्दर ये सुन्दर (खूबसूरत) के नाम हैं । चारु श्लक्ष्ण रुचिर प्रशस्त हृद्य बन्धुर १७९ ॥ दर्शनीय मनोज्ञ तथा मनके नामोंको हरण करनेवाले अर्थात् मनोहारिन् इत्यादि मनोहरके नाम हैं । अवश्याय तुषार प्रालेय तुहिन हिम

---

१ क ख पस्तकयो "पांस नीत" इति पाठ २ ग पस्तके "सन्धानित" इति पाठ

मृगाङ्कः रोहिणीपतिम् । चारोऽवसर्पः प्रणिधिर्निगूढ-पुरुषश्चरः १८१ तद्वानुक्तः सहस्राक्षः सत्यार्थं ऋतसूनृते । अत्यन्ताय चिरायेति प्राग्णेऽकस्माद्बलादिति १८२ प्रायेणेति कृतिश्चेति विभक्तिप्रतिरूपकम् । रम्भा स्त्री कदली चिह्नं मोचासारतरुश्च सा ॥ १८३ ॥ कीचको ध्वनिमद्वेणुस्तालो गेयक्रमोद्भवः । पुष्करं मुरजं पद्मं हस्तिहस्ताग्रनामकम् ॥ १८४ ॥ निस्तलं वर्त्तुलं वृत्तं स्थपुटं विषमोन्नतम् । दीर्घं प्रांशु विशालं च बहुलं पृथुलं पृथु ॥ १८५ ॥ उल्वणं दारु-

॥ १८० ॥ नीहार ये नाम पाले (बर्फ) के है । इनको करनेवाला अवस्यायकर इत्यादि तथा मृगाङ्क रोहिणीपति ये नाम चन्द्रमा के है । चार अवसर्प प्रणिधि निगूढपुरुष चर ये नाम गुप्त समाचार देने वालेके है ॥१८१॥ इनके साथ वत् लगानेसे चारवत् इत्यादि इन्द्रके नाम होतेहैं । ऋत सूनृत ये सत्यके नाम है । "अत्यन्ताय" यह बहुतके, "चिराय" यह बहुतकालके, "प्राग्णे" यह दिनके पहले भागके "अकस्मात्" यह अचानक के'बलात्' यह जबरदस्तीके,॥१८२॥"प्रायेण" यह अक्सरके, अर्थमे अव्यय है । और विभक्त्यन्त शब्दकी समान प्रतीत होते है ! रभा यह एक देवोंकी अप्सरा तथा केलेके वृक्षका नामहै । कदली यह ध्वजा तथा केलेके वृक्षका नाम है । मोचा यह केले और शाल्मलि वृक्षका नाम है ॥ १८३ ॥ आवाजवाले बासको कीचक कहतेहै । गानेके शब्दोके क्रमसे जो उत्पन्न होता है वह ताल कहलाता है । पुष्कर यह मुरज (मृदग) का कमलका और हाथीकी सूडके अग्रभागका नाम है ॥१८४॥ निस्तल वर्तुल वृत्त ये गोलके नाम हैं । जो ऊचा नीचा विषम स्थल है वह स्थपुट कहलाता है । दीर्घ प्राशु विशाल ये लम्बेके नाम है । बहुल पृथुल पृथु ये मोटेके नाम है ॥१८५॥ उल्वण दारु-

णं तिग्मं घोरं तीव्रोग्रमुत्कटम् । शीतकं तिमिरं याप्यं मन्दं विद्धि विलम्बितम् ॥ १८६ ॥ सौहार्दं सौहृदं हृद्यं सौहृद्यं सख्यसौरभम् । मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं साहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥ १८७ ॥ स्वभावः प्रकृतिः शीलं निसर्गो विस्रसा निजः । योग्यो गुणनिकाभ्यासः स्यादभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः ॥ १८८ ॥ मृषालीकं मुधा मोघं वितथं विफलं वृथा । विधुरं व्यसनं कष्टं कृच्छ्रं गहनमुद्धरेत् ॥ १८६ ॥ समस्तं सकलं सर्वं कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम् । शकलं विकलं खण्डं शल्कं लेशं लवं विदुः ॥ १६० ॥ मर्मकोशं च कलहं परिवादं छलं नयेत् । शोणितं लोहितं रक्तं रुधिरं क्षतजा-

---

ण तिग्म घोर तीव्र उग्र उत्कट ये नाम तेज (तीखे) के हैं । शीतक तिमिर याप्य मन्द विलम्बित ये देरसे काम करने वालेके नाम हैं ॥ १८६॥ सौहार्द सौहृद हृद्य सौहृद्य सख्य सौरभ मैत्री मैत्रेयिक अजर्य्य साहाय्य सगत ये नाम मित्रताके हैं ॥ १८७ ॥ स्वभाव प्रकृति शील निसर्ग विस्रसा निज ये स्वभावके नाम हैं । योग्य यह लायकका नाम है । गुणनिका अभ्यास ये रफ्त (महावरे) के नाम हैं । अभीक्ष्ण मुहुर्मुहु ये बारम्बार के नाम हैं ॥ १८८ ॥ मृषा अलीक मुधा मोघ वितथ विफल वृथा ये झूठके नाम हैं । विधुर व्यसन कष्ट कृच्छ्र गहन ये नाम दुःखके हैं । दुःखको दूर करना चाहिये ॥१८६॥ समस्त सकल सर्व कृत्स्न विश्व अखिल ये नाम सबके है । शकल विकल खण्ड शल्क लेश लव ये पदार्थके टुकड़े के नामहै ॥१६०॥मर्मकोश कलह ये लडाई झगडे के नाम हैं ।परिवाद यह निन्दाका और छल यह कपट कानाम है । शोणित लोहित रक्त रुधिर क्षतज असृज् येनाम लाल रंगके तथा लोहू (खून) के हैं ॥१६१ ॥

सृजम् ॥१६१॥ सततानारताजस्रान्वहं कन्यापति-
र्वरः। उद्वाहः परिणयनं विवाहश्च निवेशनम् ॥१६२॥
शुषिरं विवरं रन्ध्रं छिद्रं गर्त्तं च गह्वरम् । श्वभ्रं र-
स्यं च पातालं नरकं यान्त्यमेधसः ॥ १६३ ॥ अ-
दभ्रं भूरि भूयिष्ठं वहिष्ठं बहुलं बहु । प्रचुरं नैकमानन्त्यं
प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ॥ १६४ ॥ भावो भवश्च सं-
सारः संसरणं च संसृतिः । तत्त्वज्ञश्चतुरो धीरस्त्यज्ये-
ज्जन्माजवं जवम् ॥१६५॥ ओजस्व्यूर्जस्वितेजस्वी
तरस्वी च मनस्व्यपि । भास्करो भासुरः शूरः प्रवीरः
सुभटो मतः ॥ १६६ ॥ उररीकृतमप्यूरीकृतमङ्गी-
कृतं तथा । अस्तुंकारोऽभ्युपगमे सत्यङ्कारः पणार्प-

सतत अनारत अजस्र अन्वह ये नाम प्रतिसमय (हरवक्त) के है। कन्याका जो पति है वह वर कहलाता है। उद्वाह परिणयन विवाह निवेशन ये नाम विवाह (शादी) के है ॥ १६२ ॥ शुषिर विवर रन्ध्र छिद्र गर्त्त गह्वर ये पृथ्वीके छिद्र (खड्डे) के नाम है। श्वभ्र रस्य पाताल नरक ये नरकके नाम हैं। जो अज्ञानी हे वे नरकको जातेहैं १६३ ॥ अदभ्र भूरि भूयिष्ठ वहिष्ठ बहुल बहु प्रचुर नैक आनन्त्य प्रभूत प्राज्य पुष्कल ये बहुतके नाम है ॥१६४॥ भाव भव संसार संसरण संसृति जन्मन् ये संसारके नाम है। जो तत्त्वोंका ज्ञाता, चतुर तथा धीर मनुष्य है वह इस संसारके वेगको शीघ्र त्यागे ॥ १६५ ॥ ओजस्विन् ऊर्जस्विन् तेजस्विन् तरस्विन् मनस्विन् ये प्रतापीके नाम है। भास्कर भास्वर शूर प्रवीर सुभट ये शूरवीर (बहादुर) के नाम है ॥ १६६ ॥ उररीकृत ऊरीकृत अङ्गीकृत तथा अस्तु अथवा अस्तुकार ये नाम स्वीकार (मंजूर) करनेके है। सत्यकार यह मै इस पदार्थको अवश्य मोल

णे ॥१६७॥ तनुत्रं वर्म कवचमावृतिर्बाणवारणम् । कूर्पासं कञ्चुकं छत्रमातपत्रोष्णवारणम् ॥ १६८ ॥ केशं शिरोरुहं वालं कचं चिकुरमीहयेत् । चूडापाशं च धम्मिल्लं कबरी केशबन्धनम् ॥ १६९ ॥ क्षेमं कल्याणमभयं श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् । भावुकं भविकं भव्यं कुशलं च शिवं तथा ॥ २०० ॥ वक्ता वाचस्पतिर्यत्र श्रोता शक्रस्तथापि तौ । शब्दपारायणस्यान्तं न गतौ तत्र के वयम् ॥ २०१ ॥ तथापि किञ्चित्कस्मैचित्प्रतिबोधाय सूचितम् । बोधयेत्कि-

लगा इस प्रकार पण (माई) देनेके अर्थ म है ॥ १६७ ॥ तनुत्र वर्मन् कवच आवृति बाणवारण ये बकतर के नाम है । कूर्पास कचुक ये अगरखेके नाम है । छत्र आतपत्र उष्णवारण ये नाम छत्र (छत्ते) के है ॥ १६८ ॥ केश शिरोरुह वाल कच चिकुर ये नाम बालोंके है । चूडापाश धम्मिल्ल कबरी केशबधन ये नाम स्त्रीकी चोटी (जूडा) के हैं ॥ १६९ ॥ क्षेम कल्याण अभय श्रेयस् भद्र मङ्गल भावुक भविक भव्य कुशल और शिव ये कल्याणके नाम हैं ॥ २०० ॥ जहा बृहस्पति कहने वाले और इन्द्र सुनने वाले है तो भी वे दोनो शब्दोकी समग्रताके अन्तको प्राप्त नहीं हुए वहा हम कौन है ॥ २०१ ॥ यद्यपि हमने शब्दोका अन्त नहीं पाया तो भी किसीको ज्ञान होजाय इस प्रयोजनके अर्थ कुछ सूचित कियाहै। क्योकि उक्ति (कथन)मात्रसे जानने वालोको कितना समझावे उनके लिये इतनाही बहुत है । क्योकि क्या मार्गको जानने वाला साथ जाताहै अर्थात् मार्गको जानने वाला दूसरे रास्ता न जानने वाले मनुष्यको रास्ता बतला देताहै साथ नहीं जाता इसही प्रकार मैंने कुछ सूचित कर दिया है सो ज्ञानी जन इससे अन्य शब्दोका भी ज्ञान स्वत.

यदुक्तिज्ञं मार्गज्ञः सह याति किम् ॥ २०२ ॥
प्रमाणमकलङ्कस्य पूज्यपादस्य लक्षणम्। द्विसन्धानकवेः काव्यं रत्नत्रयमपश्चिमम् ॥ २०३ ॥
कवेर्धनञ्जयस्येयं सत्कवीनां शिरोमणेः। प्रमाणं नाममालेति श्लोकानाञ्च शतद्वयम् ॥ २०४ ॥ ब्रह्माणं समुपेत्य वेदनिनदव्याजात्तुषाराचलस्थानस्थावरमीश्वरं सुरनदीव्याजात्तथा केशवम् । अप्यम्भोनिधिशायिनं जलनिधिध्वानापदेशादहो फूत्कुर्वन्ति धनञ्जयस्य च भिया शब्दाः समुत्पीडिताः ॥ २०५ ॥

इति धनञ्जयनाममाला समाप्ता ।

करल२०२श्रीभट्टाकलङ्कदेवस्वामीका न्याय, पूज्यपादस्वामीका व्याकरण और द्विसन्धानकवि अर्थात् धनञ्जय कविका बनाया हुआ द्विसन्धान काव्य ये तीनों अपश्चिम रत्न है ॥ २०३ ॥ श्रेष्ठ कवियों के शिरोमणि धनञ्जय कविकी रची हुई यह नाममाला है और इस के दोसौ अनुष्टुप् श्लोक है ॥ २०४ ॥ धनञ्जयके भयसे पीडित होकर शब्द ब्रह्माजीके पास जाकर वेदोंके निनादके छलसे पुकार करते हैं और हिमालयपर्वतके स्थानमें रहने वाले महादेवजीको प्राप्त होकर उनके प्रति स्वर्गकी गंगाकी ध्वनिके मिषसे पुकार करते है । तथा समुद्रमे शयन करने वाले विष्णु के प्रति समुद्रकी गर्जनाके छलसे जाकर पुकार करते है । यह बडा आश्चर्य है ॥ २०५ ॥

इति महाकविश्रीधनञ्जयनिर्मितनाममालायाः श्रीजवाहरलाल साहित्यशास्त्रिविरचितो देशभाषानुवादः समाप्तः ॥

॥ श्रीः ॥

अथ अनेकार्थनाममाला प्रारभ्यते ।

गम्भीरं रुचिरं चित्रं विस्तीर्णार्थप्रकाशकम् । शाब्दं मना-क्प्रवक्ष्यामि कवीनां हितकाम्यया ॥ १ ॥ अर्हत्पिनाकिनौ शम्भूजिनावर्हत्तथागतौ । वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ विष्णुरुद्रौ वृषाकपी ॥ २ ॥ वैकुण्ठाविन्द्रगोविन्दावनन्तौ शेषशार्ङ्गिणौ । जीमूतौ करिकुत्कीलौ पर्जन्यौ शक्रवारिदौ ॥ ३ ॥ वनमम्भसि कान्तारे भुवनं विष्टपेऽर्णसि । घृतं सर्पिषि पानीये विषं हालाहले जले ॥४॥ तल्पं दारेषु शय्यायां ज्योतिश्चक्षुषि तारके। धवले सुन्दरे रामो वामो वक्रे मनोहरे ॥ ५ ॥ नक्षत्रे मंदिरे धिष्ण्यं वसने गगनेऽम्बरम् । परिधौ पादपे सालः सिन्धुः स्रोतसि योषिति ॥ ६ ॥ सारसः शकुनौ धूर्त्ते केतनं दीधितौ ध्वजे । मयूखः कीलके दीप्तौ पतङ्गः शलभे रवौ ॥ ७ ॥ अञ्जनः कज्जले नागे सारङ्गः पृषते गजे । सरलः प्रगुणे वृक्षे पुन्नागः सन्नरे तरौ ॥ ८ ॥ पाञ्चजन्योऽनले शङ्खे कम्बुः शङ्खे मतङ्गजे कःस्वरो द्युभवे द्युम्ने स्यन्दनं शकटेऽम्बुनि ॥ ९ ॥ अद्रिर्गिरिवनस्पत्योः शिखरी तरुभूध्रयोः । राजा चन्द्रमहीपत्योर्द्विजो दशनविप्रयोः ॥ १० ॥ मोचामरस्त्रियोः रम्भा कदली ध्वजमोचयोः । अशोकः सुमनस्तर्वोः सुमनाः सुरपुष्पयोः ॥ ११ ॥ मुक्तारजतयोस्तारो भूरि भूयः सुवर्णयोः । पानीयदुग्धयोः क्षीरं पयः सलिलदुग्धयोः ॥ १२ ॥ कालप्रकर्षयोः काष्ठा कोटिः सङ्ख्याप्रकर्षयोः। रन्ध्रसंश्लेषयोः सन्धिः सिन्धुर्नदसमुद्रयोः १३ निषेधदुःखयोर्बाधा व्यामोहो मूर्खमौढ्ययोः । कौपीनाकार्ययो-

गुह्यं कीलालं रुधिराम्भसोः ॥ १४॥ मौल्यसत्कारयोरर्घो जा-
त्यः श्रेष्ठकुलीनयोः । मेघवत्सरयोरब्दस्तार्क्ष्यौ हयगरुत्म-
तोः ॥ १५ ॥ स्तब्धतास्थूणयोःस्तम्भश्चर्चा चिन्तावितर्कयोः।
हरकीलकयोः स्थाणुः स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः ॥ १६ ॥ शंकुः
संकीर्णविवरे पलालाग्नौ च कीलके । संख्यायां काननोद्भूते
वन्हौ दावो दवोऽपि च ॥ १७ ॥ कीनाशः कृपणे भृत्ये कृता-
न्ते पिशिताशिनि । तथा पुण्यजनान्प्राहुः सज्जनान् राक्षसा-
नपि ॥ १८ ॥ विरोचनो रवौ चन्द्रे दनुसूनौ हुताशने ।
हंसो नारायणे श्रध्ने यतावश्वे सितच्छदे ॥ १९ ॥ सोम-
श्चन्द्रोऽमृतं सोमस्सोमो राजा युगादिभूः । सोमः प्रतानिनी
भेदः सोमः पौलस्त्यदिक्पतिः ॥ २० ॥ अजो विधिरजो वि-
ष्णुरजः शम्भुः रजस्तमः । अजस्त्रैवार्षिको व्रीहिरजो रामपि-
तामहः ॥ २१ ॥ शुद्धेऽनुपहते वह्नौ ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।
आषाढेऽध्यात्मसंवित्तौ ब्रह्मचर्ये शुचिर्मतः ॥२२॥ अर्थोऽभिधेय-
रैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु । भावः पदार्थचेष्टात्मसत्ताभिप्रायज-
न्मसु ॥ २३ ॥ प्रायो भूमोपमातर्क्यप्रभृत्यन्ननिवृत्तिषु । अन्तः
पदार्थसामीप्यधर्म्मसत्त्वव्यतीतिषु ॥ २४॥ अक्षो द्यूत वरूथा-
ङ्गे नयनादौ विभीतके । सारः श्रेष्ठे बले वित्ते केशे जलचरे
स्थिरे ॥ २५ ॥ वाचि वारि पशौ भूमौ दिशि लोम्नि पवौ
दिवि । विशिखे दीधितौ दृष्टावेकादशसु गौर्म्मतः ॥ २६ ॥
चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ वासवे दर्दुरे हये । मृगेन्द्रे वानरे वायौ
दशस्वपि हरिः स्मृतः ॥ २७ ॥ पद्मे करिकरप्रान्ते व्योम्नि
खड्गफले गदे । वाद्यभाण्डमुखे तीर्थे जले पुष्करमष्टसु ॥ २८ ॥
शृङ्गारादौ कषायादौ घृतादौ च विषे जले । निर्यासे पारदे
रागे वीर्येऽपि रस इष्यते ॥ २९ ॥ तीर्थं प्रवचने पात्रे लब्धा-

श्राये विदाम्बरे। पुण्यारण्ये जलोत्तारे महासत्वे महामुनौ ॥३०॥ धातुः पञ्चसु लोहेषु शरीरस्य रसादिषु । पृथिव्यादिचतुष्के च स्वभावे प्रकृतावपि ॥ ३१ ॥ प्रधानशृङ्गलांगूलभूषापुण्ड्रप्रभावना । ध्वजलक्ष्मतुरङ्गेषु ललामो नवसु स्मृतः ॥३२॥ आकृतावन्तरे रूपे ब्राह्मणादिषु जातिषु । माल्यानुलेपने चैव वर्णाः षट्सु निगद्यते ॥३३॥ अकारादावुदात्तादौ षड्जीवौ निःस्वने स्वरः। समयाचारसिद्धान्तकालेषु समयः स्मृतः ३४ तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सैन्ये तन्तौ परिच्छिदे। सत्त्वमोजसि सत्तायामुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु ॥३५॥ रूपादौ तन्तुषु ज्यायामप्रधाने नये गुणाः। ज्ञानचारित्रमोक्षात्मश्रुतिषु ब्रह्मवाग्वरा ३६ अवकाशे क्षणे वस्त्रे बहिर्योगे व्यतिक्रमे। मध्येऽन्तः करणे रन्ध्रे विशेषे विरहेऽन्तरं ॥ ३७ ॥ हेतौ निदर्शने प्रश्ने स्तुतौ कण्ठसमीकृतौ। आनन्तर्येऽधिकारार्थे माङ्गल्ये चाथ इष्यते ॥ ३८ ॥ हेतावेवं प्रकारादौ व्यवच्छेदे विपर्यये । प्रादुर्भावे समाप्तौ च इति शब्दः प्रकीर्त्तितः ॥ ३९ ॥ धर्मो धनुष्यहिंसादावुत्पादादात्रये नये । द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते जीवादौ दारुवैकृते ॥४०॥ मूर्त्तिमत्सुपदार्थेषु संसारिण्यपि पुद्गलः । अकर्म्मकर्म्मनोकर्म्मजातिभेदेषु वर्गणा ॥ ४१ ॥ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः। वैराग्यस्यावबोधस्य षण्णां भग इति स्मृतः ॥४२॥ प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये विविक्ते निर्वृतावपि । लब्धिः केवलबोधादावष्टिप्तौ नियतौ श्रियाम् ॥ ४३ ॥ अनेकान्ते च विद्यादौ स्यान्निपातः शुभे क्वचित् । दर्शनादौ मणौ रत्नं भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति ॥ ४४ ॥ परमात्मा जिने सिद्धे परमेष्ठ्यर्हदादिषु। सिद्धः सिद्धनिषद्यायामर्हत्सिद्धाश्रियामपि ॥ ४५ ॥ अर्हत्सिद्धमिति द्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनौ। अर्हदादीनपि प्राहुः शरणोत्तममङ्गलान् ॥ ४६ ॥

इति महाकविश्रीधनञ्जयकृता अनेकार्थनाममाला समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

* शुद्धिपत्रम् *

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	स्नमतः	स्त्रमतः
३	१	मेखलोत्पत्तिका	मेखलोपत्यका
,,	३	नाथ	नाथः
,,	७	बलीमुखः	ब (व) लिमुखः
,,	७	वानरो	वानरो
,,	१३	उत्पत्तिकावत	उपत्यकावत्
,,	१६	फलिन्	फलिन
,,	१८	बलीमुख	बलिमुख
,,	२३	वार	वा?
४	१४	आदि	आदि घन
५	१	इन्दीवर	इन्दीवरं
,,	२	मरविन्दं	चारविन्दं
,,	६	श्रवंती	स्रवन्ती
,,	७	नाम्ना	नाम्नी
,,	१६	श्रवंती	स्रवंती
६	२	च्छवासौ	च्छवासो
७	३	पत्येक	वत्येक
,,	४	बन्धुकी	बन्धकी
,,	७	ऽऽजीवा	जीवा
,,	११	कायाङ्ग	कायोऽङ्ग
,,	१५	पतिपति	पतिवती

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१	उद्वाह	उद्वह
,,	५	समवायिकः	सामवायिकः
,,	६	अ.ऽन्यो	भ्रातृव्यो
,,	१२	अभक	अर्भक
६	४	पूर्वत्वो	पूर्वत्वे
१०	१	।	॥ ५० ॥
,,	४	समाद्यश्वौ	समाऽश्वश्च
,,	८	ऽन्यथा	वयः
,,	२३	त्रिष्कर	विष्किर वयस्
११	१	तडित्वान्वा	तडिद्धन्वा
,,	८	ऐरावण	चैरावणा
,,	१४	ताडित्वत्	ताडिद्धन्वन
,,	२१	तुराषाह	तुराषाट्
,,	२२	कौशिक	कौशिक
१२	३	स्तथा	श्चनः
,,	११	शर वणा	शरवणा
,,	१५	जवन	जवन चल
१३	६	कर्पद्यपि	कपर्द्यपि
,,	८	नदीश्वरः	नदीश्वरी
.	१८	आदि	आदि तथा गंगा नदीश्वरी ये गंगाके नामहैं १
१४	२२	वाणक	वाणके
,,	२३	आसन	असन
,	२४	कहत	कहेत
१५	१	रासनं	रसनं
,,	७	प्रान्तमाल्यादि	प्रान्तमल्यादि

(१) ॥७१॥ के पहले २ यह पाठ शुद्धहै

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	६	स्तम्बेरेमः	स्तम्बेरमः
,,	८	नागाद्यारिः	नागाद्यारिः
,,	६	व्याघ्रश्चशू(मृरः)	व्याघ्रश्चशू (मृ) रः
,,	१२	मनि	मीन
,,	१८	संयत	संयत
,,	२०	दंतिन	दंतिन्
,,	२४	केशिन्	केशरिन्
१७	२३	"दाय इत्यादि"	दायक लगादेनेसे वि- त्तदायक इत्यादि
१८	१	दायदम	दायकम्
२०	२	हतम । स्मृतं	स्मृतम् । सं
,,	३	शमीस्थं	शमस्थिं च
,,	१०	मदः संमन्म	मदस्यः मत्म-
,,	१६	मात्	मत्
,,	२०	मदसुचित	मदस्य
,,	२१	संमदुचित	मत्
२१	१६	तीथकर	तीर्थकर
२३	७	प्रावीटक	प्रावृषिक
,,	१०	लेलीहानो	लेलिहानो
,,	१६	प्रावटिक	प्रावृषिक
२४	६	निवृत	निर्वृत
,,	२०	कालिन	कालिल
,,	२१	जिनन्द्र	जिनेन्द्र
,,	२२	धिष्ण्यत	धिष्ण्य
२५	२	वातायनमत्तालम्ब- मालम्ब्यंसुखमामताम	वातायनमत्तालम्बमा- लम्ब्यंमुखमासनम्-
,,	२२	छद्म वृत्तान्त	छद्मवृत्तान्त

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	१७	मत्तालम्ब	अनालम्ब आलंब्य मु-खासन
२६	१	समुजो	समजो
,,	६	कर्णशुली	कर्णशूली
,,	२३	श्रोद्धदव	श्राद्धदव
२८	३	निर्वाद	निर्वाध
२८	१५	निव।र्द	निर्वाध
२६	११	मालभ्यं	मालम्बं
,,	२०	चतुप्यात्	चतुष्पात्
,,	२२	आलभ्य	आलम्ब
३०	६	षष्ठिकः	षाष्टिकः
,,	१०	सकृत्कारि	शकृत्कारि
,,	११	षड्दर्शनः	षड्दशनः
,,	२५	इसकाअर्थसंगतनहींहुआ	वत्स शकृत्कारिजातये वत्सके षोडषड्दशन-येछदांतवालेकेनामहैं
३१	२	गूढनरो	गूढचरो
,,	६	च वैरिणम्	पुरातनम्
,,	१३	गूढनर	गूढचर
,,	२२	जीर्णा	जीर्णा पुरातन
३२	४	रह्यो	रयो
,,	१४	(कंजूम)	(कंजूस) के नाम
,,	१६	रहम्	रय
१	३	शम्भूजिना-	शम्भू जिना
१	५	काननोदभृते	काननोद्भूते
३	१६	वराग्यस्प	वैराग्यस्य
,,	२०	वल्यमार्ह-	वल्यमार्ह-
	२५	द्रावप्य	द्रावप्य